अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें

रमेश 'कँवल'

SHWETWARNA PRAKASHAN
New Delhi

Published by Shwetwarna Prakashan in Hindi in Hardcover as *Amritkal Ki Aadhunik Ghazalen* (First Edition) Authored by *Ramesh 'Kanwal'* in the year 2024.

Shwetwarna Prakashan
212 A, Express View Apartment
Super MIG, Sector 93, Noida-201304, INDIA
Mobile: +91 8447540078
Email: shwetwarna@gmail.com
Website: www.shwetwarna.com

Copyright © *Ramesh 'Kanwal'*

ISBN: 978-81-975433-5-7

Views and opinions expressed in this work are author's own and the facts are reported by the author and the publisher is in no way liable for the same.

All rights reserved.

Book Design by *Sharda Suman*

No part of this book may be reproduced, or stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without express written permission of the author.

समर्पण

500 वर्षों के निरंतर संघर्ष का प्रतिफल
अयोध्या की राम जन्मभूमि को

श्री राम मंदिर, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत

जय श्री राम

मानसिक ग़ुलामी की स्मृतियों से निकलता नया संसद भवन

संगिनी मंजू प्रसाद

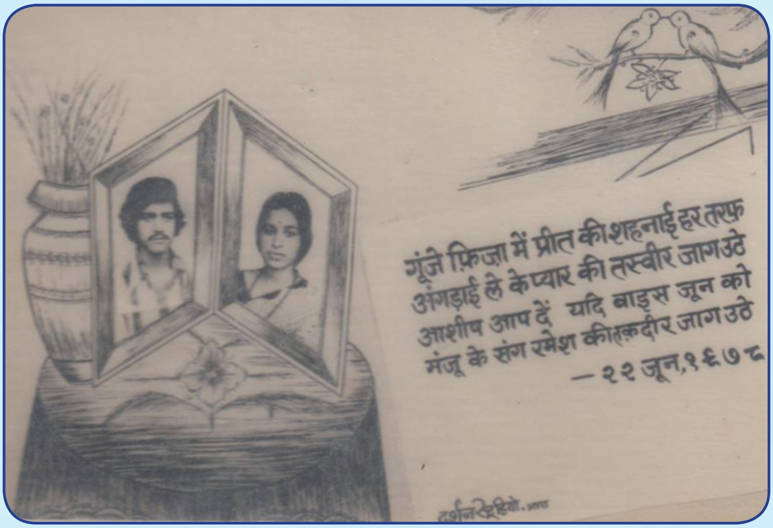

रमेश 'कँवल' की यादों के अल्बम से

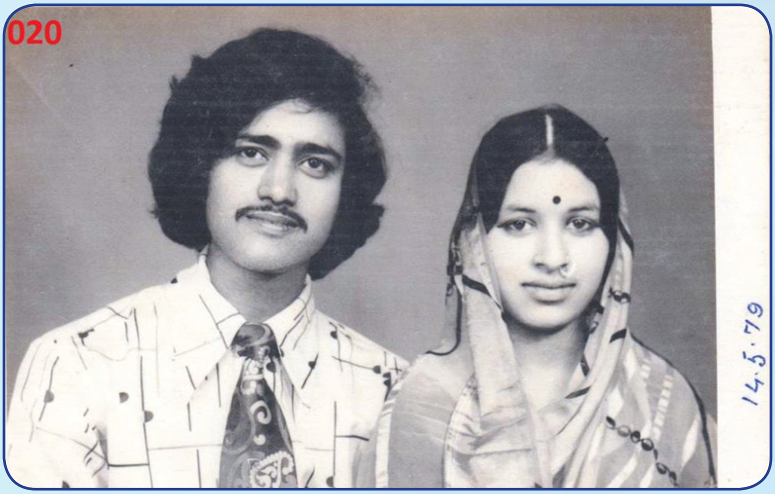

यादों की ताज़गी

कश्मीर की वादियों में

पटना, 22 जून, 2003-परिणय का रजत जयंती वर्ष

अनुक्रमणिका

❍	अमृतकाल के सत्य की साक्षी ग़ज़लें	15
❍	आधुनिक भावबोध की ग़ज़लें, नज़्में और गीत	21
❍	सामाजिक सरोकारों की पहरेदारी	25
❍	बुनियाद पड़ रही है प्राचीन सभ्यता की	29
1.	अब कहाँ मधुमास अपने गाँव में	33
2.	अब तक आँखों में वो ख़्वाब सुनहरे हैं	34
3.	अक्षरों से शब्द बेकल हो गए	35
4.	आइए अब न शरमाइए	36
5.	आइए बैठिए	37
6.	आँखें, ज़ुल्फ़े, होंठ और गाल देखते रहे	38
7.	आगाज़ मुबाइल है अंजाम मुबाइल है	39
8.	आँच के पास आ गया कोयला	40
9.	आपकी बातों में आ गए	41
10.	आपके हुस्न की लताफ़त हूँ	42
11.	आपको देखा जो मैंने ख़्वाब में	43
12.	आप बताएँ क्या है सच	44
13.	आप मेरे क़रीब आने लगे	45
14.	आप से जब मन मिला है	46
15.	आप से मेहरबान का वादा	47
16.	ओस पर धूप जब सँवरती है	48
17.	इश्क़ में हम नाकाम हुए	49

18. इशारा, तबस्सुम, नज़ाकत जवानी 50

19. ईंट गारे का था हमारा घर 51

20. ईश्वर अंश भला इंसान 52

21. उजाले बाँटने जो चल पड़े हैं 53

22. उनसे मिल कर भाव विह्वल हो गए 54

23. उसके तन में बसी हुई ख़ुशबू 55

24. उस से मिलना बेहद अच्छा लगता है 56

25. कर के सुमिरन पकाई है रोटी 57

26. करता आया अब तक पाप 58

27. करना है कुछ-कुछ परिवर्तन संविधान में 59

28. कहो! कैसे हुआ आना, बताओ तो 61

29. काली रात का टीका चाँद 62

30. किनारे खड़ा था भला आदमी 63

31. किसी के लिये आशिक़ी है मुहब्बत 64

32. किसी राहबर ने ये सच ही कहा है 65

33. कुर्सियाँ हैं कहाँ फैला अख़बार है 66

34. ख़ुशनुमा लमहों के पंछी छत बदलते ही रहे 67

35. ख़ुशियों का दीदार है औरत 68

36. खोकर पाने की आशा 69

37. ग़ज़वा-ए-हिन्द का इरादा है 70

38. ग़म के दस्तरख़्वान पर ख़ुशियाँ सजा सकता हूँ मैं 71

39. गर्दिश से निकल आया है क़िस्मत का सितारा 72

40. घर के बाशिंदों की अनबन बढ़ गयी है 73

41. चूम कर आ गया नयन उसका 74
42. जब तक मेरे पास रहा 75
43. जब फेंके कोई मुझ पे तेरे नाम का पत्थर 76
44. जब से इस दिल को भा गयी मिट्टी 77
45. ज़िंदगी की उलझनों का हल बताया 78
46. जो समर्पित थे कल तक बदलने लगे 79
47. डिजिटल करे पढ़ाई ग़म 80
48. डूबने वालों में उसका नाम है 81
49. तुमसे मिलने का इरादा 82
50. कोरोना ने जमकर मचायी तबाही 83
51. तू उधर था, इधर हो गया 85
52. इस इश्क़ से नशीला कोई नशा नहीं है 86
53. मेरी मुट्ठी में चारों धाम आए 87
54. थोड़ी ख़ुशी, क्यों बेसी ग़म 88
55. इश्क़ का आँगन इधर गुलज़ार है 89
56. दर्द की भाषा पढ़ो 90
57. नगर, गाँव, बस्ती जलाने से बचिए 91
58. नज़र से आरती तेरी उतारूँ 92
59. निगाहों में बसी है तेरी मूरत 93
60. पाँच जी की ही चल रही है हवा 94
61. पाँव बुज़ुर्गों के दाबे 95
62. फूल ख़ुशबू से समाहित हो गए 96
63. बड़े ही ख़ूबसूरत हैं, बड़े प्यारे मज़े के दिन 97

64. बदला बदला सा है मेरा दफ़्तर 98

65. बरसों बाद ज़मानत पर है आई ग़ज़ल 99

66. बाग़ में मिली बहार 100

67. बे-हद मालामाल हुआ 101

68. भरी हुई थी मेरी आँख, हँस रहा था वो 102

69. मुँह पे गमछा बाँधने की ठान ली 103

70. मुहब्बतों का क़ुसूर है ये 104

71. मेरी आँखों में आ गए आँसू 105

72. मेरे घर आई ख़ुशी 106

73. मेरे दिल पर हुकूमत कर रही है 107

74. मैं यजमान जबसे बना हूँ 108

75. ये ज़िन्दगी सवाब है 109

76. रहबरों की मस्तियाँ 110

77. रात का क़िस्सा कहानी आधी रात 111

78. लगता है कुछ अच्छा दिल 112

79. वक़्त के इजलास से मुंसिफ़ उतारे जाएँगे 113

80. वतन ख़ुद अपनी मुख़्तारी करेगा 114

81. वह हमनवा नहीं है 115

82. शह्र दर शह्र भर गया पानी 116

83. सभी कहते हैं मुझको सब पता है 117

84. साजन से मिल आई धूप 118

85. साथ चलने की तमन्ना दिल में है 119

86. सितारों भरा जग दुलारा गगन 120

87. सिर्फ़ अदहन में है उबलती आग 121
88. हर ऑफ़िस में एक सा मंज़र 122
89. हुनर पैरवी का सिखाते हमें 123
90. हैं अपने सम्बन्ध यथावत 124
91. हौसलों की उड़ान अभिलाषा 125
92. हर ख़ुशी राह में तेरी आए 126

नज़्म

93. पार सत्तर के हो गए हम भी 128
94. पुण्य कर्मों के फल थे बाबूजी 130
95. मैं हूँ मोदी का परिवार 131
96. आइए होली मिल जुल मनाएँ सभी 132
97. लोकतंत्र के महापर्व पर अपना फ़र्ज़ निभाएँ 133

राम अभिनंदन गीत

98. लगा कर घोष 'जय श्री राम' निकले 135
99. श्रीराम तुम्हारा हम गुणगान सुनाते हैं 136
100. ख़त्म हुआ बनवास, मनाओ उत्सव, झूमो गाओ। 138
101. अब तो आ गये राम, उठो सब मंगल गाओ। 139
102. लौटे राम अयोध्या धाम 140
❍ ग़ज़लों में प्रयुक्त बह्र और उनके अरकान 141

अमृतकाल के सत्य की साक्षी ग़ज़लें

कविता साहित्य की लाडली है। साहित्य के परिवार से जुड़ा शायद ही कोई ऐसा सदस्य होगा जिसने इससे लाड़ न लड़ाया हो। प्रत्येक संवेदनशील मनुष्य ने कभी न कभी कविता में अपना मन रखा और नहीं तो अपने मन में कविता को रखा। इस से मन की गाँठे खुलती जाती हैं और वह अपने अनंत से परिचित होता है। कविता में ग़ज़ल अपनी रहस्यमयी ओजस्विस्ता के कारण विशिष्ट स्थान रखती है। ग़ज़ल के बीज शब्द अपने मूल अर्थों की आहुति से ऐसे नए अर्थों और बोध की अनुभूति प्रदान करते हैं जो मन को आंदोलित, आलोकित और आनंदित करने में सक्षम होते हैं। साहित्य प्रेमियों के लिए ग़ज़ल के शे'र मंत्र स्वरूप होते हैं, जिनके सुनने भर से उनके अंतस में यथार्थ के विभिन्न आयाम जाग्रत होकर भावबोध के ऐसे कोलाज तैयार करते हैं जिसके प्रभाव प्रायः अनिर्वचनीय होते हैं। इसी के चलते ग़ज़ल विभिन्न भाषाओं में अपनी यात्रा के अनुभव नई भाषाओं से साझा करते हुए उनके साहित्य की मुख्य काव्य-विधा बन गई है। हिन्दी एक उदाहरण है। हिन्दी भाषी ग़ज़लकार आज जिस सक्रियता का परिचय दे रहे हैं वह अभूतपूर्व है। रमेश 'कँवल' का नाम भी उन रचनाकारों में से एक है जो ग़ज़ल की चिर समृद्धि के लिए बहुआयामी योगदान दे रहे हैं।

इस संग्रह की ग़ज़लों से गुज़रते हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि रमेश 'कँवल' एक सिद्धहस्त ग़ज़लकार हैं और ग़ज़ल जैसी श्रमसाध्य विधा को साधने में उन्होंने अवश्य सतत साधना की है। व्याकरण सम्मत इन ग़ज़लों में उनके विस्तृत जीवनानुभव के रंग सम्मोहन शक्ति से लैस हैं। लंबे प्रशासनिक अनुभव ने उन्हें विशिष्ट सामाजिक और राजनैतिक चेतना से संपन्न किया है और उसी चेतना की बेबाक अभिव्यक्ति ने इस संग्रह में जान फूँकी है।

पिचहत्तर बरस हो गए ऐ वतन
नया देश अपना नया आदमी

‘कँवल’ देश रफ़्तार में खो गया
पिछड़ता हुआ रह गया आदमी

मंच पर दूल्हे के ख़ेमे में है हलचल
अब लिए जयमाल दुल्हन बढ़ गई है

शहर का ज़हरीला है वातावरण
नागरिक ख़ुशियों से वंचित हो गए

हर ऑफ़िस में एक सा मंज़र
हर कुर्सी पर एक सा अफ़सर

ख़मोश हो के गवाहों के झूठ सुनता रहा
किसी बिके हुए मुंसिफ़ का फ़ैसला था वो

घर के बाशिंदों की अनबन बढ़ गई है
रेशमी पर्दों की उलझन बढ़ गई है

रफ़्तार में खोए आदमी का पिछड़ना और दुल्हन का जयमाल लिए आगे बढ़ जाना, नोटिस करने वाली बातें हैं। पहली बात में मनुष्यता की पीड़ा है और दूसरी में मातृशक्ति के स्वाभिमान के जयघोष का आह्लाद है। ‘एक सा ऑफ़िस एक सा अफ़सर’ हमारी प्रशासनिक व्यवस्था पर करारी चोट कर रहा है। इस संग्रह में आज़ादी के अमृतकाल की परछाईं का सच जगह जगह उभर कर आया है। बाशिंदों की अनबन और रेशमी पर्दों की उलझन भी ग़ौर करने लायक़ है। पर्दे तो रेशमी हैं लेकिन अहसास के चीथड़े हो चुके हैं। रमेश ‘कँवल’ के सूक्ष्म निरीक्षण की शक्ति का प्रमाण

हैं ये शे'र। संग्रह में गाँव, गगन, मिट्टी, हवा, आग, पानी, नदी, घर, आदमी, औरत, आँसू, धूप, रोटी, कोयला, दफ़्तर आदि रदीफ़ का हिस्सा हैं। इस से ग़ज़लकार के सरोकार स्पष्ट होते हैं। रमेश 'कँवल' ने अपने समय को देखा, भोगा और पहचाना है। वे उसे स्वीकारते हुए उसकी आवाज़ को शब्द दे रहे हैं। कोरोना काल की विभीषिका का उद्वेलन भी जगह-जगह दिखाई देता है

देखते ही व्यथा विसर्जन की
झील नदियों पे छा गए आँसू

मुँह पे गमछा बाँधने की ठान ली
गाँव ने दो गज़ की दूरी मान ली

आपदाओं में भी अवसर खोजना
यह कला भी देश ने पहचान ली

नदियों के किनारे विसर्जन तो पहले भी होते ही थे लेकिन जिस तरह अबकी बार विसर्जन हुए हैं वह अमानवीय और कारुणिक थे। दो गज़ की दूरी का जुमला क़ब्र के लिए आवश्यक दो गज़ ज़मीन की याद दिला देता है। तीसरा शे'र एक सम्पूर्ण बयान है।

इन ग़ज़लों में बेबाकी और निडरता देखते ही बनती है। समाज में व्याप्त विसंगतियाँ, नागरिकों की व्यथाएँ, अभाव, उपलब्धियाँ आदि पर बहुत से शे'र इस संग्रह में हैं। रमेश 'कँवल' की जीवन दृष्टि और उनकी पक्षधरता स्पष्ट है। जहाँ बयान देना है वहाँ बयान है और जहाँ प्रश्न करना है वहाँ प्रश्न है।

पंछियों के दल बड़ी हैरत में हैं
कैसे कम पानी बचा तालाब में

रहते हैं सुख चैन से दोनों 'कँवल'
तुलसी और रैदास अपने गाँव में

हम पे अमृतकाल की मस्ती चढ़ी
हम तरक़्क़ी के हिमाचल हो गए

आँख नम हो गई क्यों तेरी
क्या कोई दर बदर हो गया

बहुत सभ्य सुंदर हैं 'मानस' में बातें
इसे सायनाइड बताने से बचिए

इस संग्रह में प्रेम की अभिव्यक्ति भी है। कुछ बहुत ही सुंदर शे'र हुए हैं। इसी तरह रमेश 'कँवल' की विराट गंभीरता में चुलबुलेपन और संतुलित व्यंग्य के लिए भी जगह है। पुस्तक के अंतिम भाग में कुछ नज़्में हैं। 'श्री राम अभिनंदन गीत' खंड में श्री राम और उनके प्रति आस्था के गीत हैं। सबसे अंत में संग्रह की ग़ज़लों में प्रयुक्त वज़्न दिए गए हैं। इस से नवोदित रचनाकार लाभान्वित होंगे।

रमेश 'कँवल' की काव्य भाषा शे'र के मूड और कथ्य के अनुरूप है। एक तरफ़ जहाँ अरबी फ़ारसी के शब्द हैं वहीं दूसरी तरफ़ संस्कृत के शब्द भी हैं। अंग्रेजी के बोलचाल के शब्दों का तड़का भी यथोचित है। सबसे बड़ी बात यह है कि भाषा को बनावटीपन से बचाया गया है। यह संग्रह ग़ज़ल के लिए उपयुक्त आधुनिक बोलचाल की हिंदुस्तानी भाषा को गढ़ने वाली कोशिश का हिस्सा है। जिस निडरता का उल्लेख ऊपर हुआ है वह रमेश 'कँवल' की काव्यभाषा में भी है। वे जब रोजमर्रा के चित्र खींचते हैं तो उसके अनुरूप ही शब्दों का चयन करते हैं। इसी कारण शे'र प्रभावशाली हुए हैं। चप्पल, चैनल, डिब्बा, सनातन, राम मंदिर, स्क्रीन, मोबाइल, पाँच जी, वंदे भारत, नेट सोशल मीडिया, शिक्षा नीति, बुलडोजर आदि शब्द सहजता से उनके शे'र में आते हैं। कुछ शे'र देखिए-

इन दिनों है दुकानों पे मनहूसियत
अब अमेज़न पे मस्ती का बाज़ार है

एक बाइक पर सिमटते दोस्त दो
लम्स के ख़ुशरंग बादल हो गए

प्रस्तुत संग्रह 'अमृतकाल की आधुनिक गजलें' इन अर्थों में अनूठा है कि वह ग़ज़ल के अनुशासन का पालन करते हुए कहीं कहीं उसकी परम्परा के दायरे से लगभग बाहर खड़े होकर नई परम्परा की खोज करता प्रतीत होता है। ग़ज़ल में जब भाषा बदलती है तो शब्द बदलते हैं; शब्द बदलने से ध्वनि बदलती है और ग़ज़ल प्रेमियों को इस नई ध्वनि से परिचित होने में समय लगता है। यह पहले तरह का परिवर्तन है। दूसरे तरह का परिवर्तन ग़ज़ल के कंटेंट को लेकर होता है। एक ही भाषा में कंटेंट का क्रमिक परिवर्तन होता ही रहता है लेकिन दूसरी भाषा में यह परिवर्तन बहुत अलग गति पकड़ लेता है। तीसरा परिवर्तन ग़ज़ल के मूल सिद्धांतों में आंशिक परिवर्तन से संबंधित होता है। इस संग्रह में कुछ स्थानों पर इस तीसरे तरह के परिवर्तन के दर्शन होते हैं। ग़ज़ल का शे'र सर्वकालिक नहीं तो दीर्घकालिक होता है अर्थात उसे अगर सदियों बाद भी पढ़ा जाए तो सुधी पाठक उस से अर्थ ग्रहण कर लेता है। उसमें किसी घटना विशेष या तात्कालिक संदर्भ का उल्लेख इस तरह नहीं होना चाहिए कि आने वाले समय में वह बात प्रासंगिक न रह जाए और शे'र से अर्थ ग्रहण करना दुष्कर हो जाए। चुनौती यह है कि अपने वर्तमान को स्थान देना भी आवश्यक है लेकिन इस तीव्र गति से परिवर्तन शील समय में वर्तमान को सीधे सीधे व्यक्त करने के ख़तरे हैं। उदाहरण के लिए यह शे'र लीजिए

इन दिनों है दुकानों पे मनहूसियत
अब 'अमेज़न' पे मस्ती का बाज़ार है

ट्रेन मज़दूरों की ख़ातिर चल पड़ीं
बच्चों ने घर पर सुखद मुस्कान ली

पहले शे'र में 'अमेजन' शब्द यहाँ जो अर्थ आज संप्रेषित कर रहा है क्या आने वाले समय में भी वही अर्थ देगा। अगर वह भी 'ट्विटर' की तरह केवल नाम बदल

ले तो! दूसरे शे'र में भी कोरोना के दौरान मज़दूरों के पलायन के प्रसंग को ध्यान में रखे बग़ैर शे'र के अर्थ तक पहुँचना मुश्किल होगा।

जैसे कि 'मुक्तिबोध' ने अन्य संदर्भ ने कहा था कि अब अभिव्यक्ति के ख़तरे उठाने होंगे, उसी तर्ज़ पर इस सदी की ग़ज़ल ये ख़तरे उठाकर अपने वर्तमान को आवाज़ दे रही है। ज़ाहिर है कभी वह सफल होगी कभी नहीं। रमेश 'कँवल' ने ये ख़तरे उठाए हैं। ग़ज़ल का विस्तृत फ़लक इसके लिए तैयार हो रहा है। क्या पता कल ग़ज़ल की परम्परा में नया अध्याय जुड़े।

अमृतकाल के सत्य की साक्षी ग़ज़लों का यह संग्रह सुधी पाठकों की आशाओं पर खरा उतरेगा। आधुनिक ग़ज़लों के विकास क्रम में यह एक कड़ी है।

इस महत्वपूर्ण संकलन के लिए रमेश 'कँवल' जी बधाई के पात्र हैं। 'अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें' पुस्तक की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

21 अप्रैल, 2024

महावीर जयंती

विजय कुमार स्वर्णकार

45 कादंबरी अपार्टमेंट,

सेक्टर-9 रोहिणी, दिल्ली 110085

संपर्क अंक 995 855 6141

आधुनिक भावबोध की ग़ज़लें, नज़्में और गीत

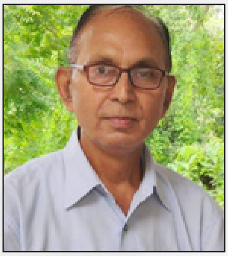

रमेश 'कँवल' मौजूदा दौर की शाइरी का एक सुख्यात नाम है। हिन्दी-उर्दू पर समान अधिकार रखने वाले कँवल जी शाइरी के फ़न पर भरपूर पकड़ रखते हैं। मेरा सौभाग्य है कि उनकी अधिकांश किताबें पढ़ने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ है। वे एक समर्पित और आस्थावान रचनाकार हैं। उनकी ग़ज़लें व्याकरण की कसौटी पर परखी हुई हैं। रचनाएँ भाषाई आग्रह से मुक्त सहज, सरल और रवानी लिए हुए हैं। आम बोलचाल में प्रयोग किये जाने वाले अंग्रेजी शब्दों का भी इन्होंने सटीक इस्तेमाल किया है अपनी ग़ज़लों में। साफ़बयानी और मुहावरेदानी ग़जलों में प्रभावोत्पादकता पैदा करती हैं।

'अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें' पाण्डुलिपि रूप में हस्तगत हुई। विस्तार से पढ़ते हुए संग्रह में सम्मिलित ग़ज़लों, नज़्मों, गीतों में उतरने, समझने और उन्हें आत्मसात करने का सुखद अवसर प्राप्त हुआ। प्रभु श्री राम के बालस्वरूप एवं अयोध्या की रामजन्म भूमि को समर्पित यह पुस्तक रमेश कँवल जी की राम के प्रति अनन्य आस्था की परिचायक है। राष्ट्रप्रेम के साथ ही सनातन एवं भारतीय संस्कृति में अगाध आस्था रखते हैं वे जो उनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

संग्रह में कुल बानबे ग़ज़लें, पाँच नज़्में और प्रभु राम पर केन्द्रित पाँच गीत सम्मिलित किए गये हैं। काव्य-बिम्बों के प्रयोग में आवश्यकतानुसार अधुनातन एवं पारम्परिक दोनों को सम्मिलित किया गया है। तख़य्युलात की परवाज़ के साथ ही शेरियत का भी पूरा ध्यान रखा गया है।

ग़ज़लों की भावभूमि व्यापक है। मानवीय संवेदनाएँ, जीवन की जटिलताएँ, मनुष्य में घर करती विद्रूपताएँ, सामाजिक विषमताएँ आधुनिक ग़ज़लों की विषयवस्तु तो हैं ही साथ ही शायर अपने धर्म का पालन करते हुए आम आदमी को आगाह

करता है, समाधान देता है और दिशाबोध भी कराता है। यही इन ग़ज़लों की सार्थकता है। ग़ज़ल के सुधी पाठकों के लिए कुछ पसन्दीदा शे'र उद्धृत कर रहा हूँ-

बड़े लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बड़ा त्याग भी करना पड़ता है। इस भाव को रूपायित करता शे'र देखिए-

छाँव में इक पेड़ की बैठे रहे,
फिर तथागत यश के पीपल हो गये।

ज़िन्दगी की मुश्किलों को सहजता से पार करने की सीख देता हुआ बहुत प्यारा शे'र आप भी देखिए-

मत अँधेरे से घबराइए,
गुनगुनाते हुए आइए।

मोबाइल को ही अपना सबकुछ मानने वाले मौजूदा दौर के इंसान को आगाह करते हैं रमेश कँवल जी-

आगाज़ मुबाइल है अंजाम मुबाइल है,
इंसान के हाथों में सुखधाम मुबाइल है।

रेडिएशन भले ही जाँ ले ले,
लत मुबाइल की कब सुधरती है।

मानव मन कभी-कभी बच्चे की तरह ज़िद पर उतर आता है। इसे बहुत ही ख़ूबसूरती से शे'र में पिरोते हैं कँवल जी-

चाँद को थाल में उतारूँ 'कँवल',
एक बच्चे की ज़िद हूँ! जुरअत हूँ।

अपनी सामर्थ्य से अधिक वादा करने वालों का सच उजागर करता हुआ बेहतरीन शे'र देखिए-

दस्तरस में ज़मीं नहीं जिसकी,
कर गया आसमान का वादा।

बेटियों की उपलब्धियों को उजागर करने के साथ उनपर गर्व करता है शायर और अपनी मंगलकामना व्यक्त करता है-

धरा जल गगन पर हैं फहराये झंडे,
रहे बेटियों की सलामत जवानी।

सनातन धर्म के प्रति गहरी आस्था रखने वाले कँवल जी के लिए किसी उत्सव से कम नहीं सनातन की यश पताका का फहरना-

सनातन धर्म का झंडा है लहराया,
फ़क़ीरों से मिलो उत्सव मनाओ तो।

सम्बंधों में संदेह दिलों में दूरी पैदा करता है और रिश्ते को खोखला कर देता है। शे'र देखिए-

शक की गुंजाइश बनी जबसे हमारे दरमियाँ,
मुट्ठियों की रेत सी हम तुम फिसलते ही रहे।

तकनीक हमारे देश की प्रगति में किस तरह सहायक है इस ओर ध्यान आकृष्ट करता हुए बेहतरीन शे'र देखिए-

बायो मेट्रिक हाज़िरी से है इज़ाफ़ा काम में,
टेक्निक से इक नया भारत बना सकता हूँ मैं।

पैरवी और रिश्वत का बोलबाला है हर जगह। ग़रीब और कमज़ोर तबके की सुनवाई कहीं नहीं है।कितना सटीक शे'र हुआ है-

मुफ़लिसों की अर्ज़ियाँ मायूस हैं अब,
पैरवी-रिश्वत की अकड़न बढ़ गयी है।

कभी ऐसा भी होता है कि अपने काम में सिद्धहस्त होते हुए भी आदमी बुरे अंजाम को प्राप्त हो जाता है। शे'र देखिए-

डूबने वालों में उसका नाम है,
इक शिनावर का अजब अंजाम है।

वर्तमान परिदृश्य में हमारी उत्कृष्ट संस्कृति का पुनरुत्थान हमारे लिए संतोष एवं गर्व का विषय है-

बुनियाद पड़ रही है प्राचीन सभ्यता की,
ऐसा हज़ारों बरसों तक में हुआ नहीं है।

उद्धृत अशआर की रोशनी में कँवल साहब की सोच-समझ, उनकी अधुनातन दृष्टि साफ़ नजर आती है। प्रेम-मुहब्बत जीवन का आधार है ऐसा बारम्बार इंगित किया है उन्होंने।

अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें सदैव की तरह ग़ज़ल प्रेमी पाठकों के बीच मक़बूल होंगी इसी शुभकामना के साथ।

शुभेच्छु-

5 मई, 2024

राजमूर्ति 'सौरभ'
ग्राम एवं पोस्ट-सरायमुरार सिंह,
ज़िला-प्रतापगढ़, उ.प्र., पिनकोड-230402
मोबाइल नम्बर-7007930595

सामाजिक सरोकारों की पहरेदारी

आदरणीय रमेश कँवल जी अपने सेवाकाल में विभिन्न महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन रहे हैं। उन्होंने शासन को भी और समाज को भी बड़े नज़दीक से देखा है। मैंने उनमें एक विशेष बात देखी है कि वह जो भी करते हैं, बड़े मनोयोग से करते हैं। किसी भी कार्य के प्रति उनकी निष्ठा और लगन प्रणम्य है। वह सिर्फ़ अपनी पुस्तकें ही नहीं, बल्कि ग़ज़लों के कई संकलन संपादित कर प्रकाशित करा चुके हैं। आयु की सत्तर सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद भी उनका उत्साह थका नहीं है। यही कारण है कि वह आज भी युवाओं की तरह ऊर्जावान रहकर अपने साहित्यिक कार्य कुशलतापूर्वक कर रहे हैं।

उनकी कई पुस्तकें-लम्स का सूरज (उर्दू), सावन का कँवल (हिंदी) 1997 में, शोहरत की धूप (हिंदी) 2013 में, रंगे-हुनर (उर्दू) 2016 में तथा स्पर्श की चाँदनी (ग़ज़लें एवं नज़्में) 2019 में प्रकाशित होकर साहित्यिक समाज में चर्चा का केंद्र बन चुकी हैं। इसके अलावा उनके संपादन में-‘अक़ीदत के फूल’ (ग़ज़ल-नज़्म) 2020 में, ‘2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें’ (600 ग़ज़लों का संकलन) 2021 में, ‘21वीं सदी के 21वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें’ और एक रुक्नी अनूठी ग़ज़लें 2022 में, ‘अमृत महोत्सव की ग़ज़लें’ (75 रदीफ़ों पर ग़ज़लें) 2023 में-आदि संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अलावा ‘वंदन! शुभ अभिवंदन!’ शीर्षक से सनातन धर्म के विभिन्न देवी-देवताओं पर आधारित वंदनाओं / कविताओं का संग्रह वर्ष 2023 में प्रकाशित हो चुका है, जिसमें देश भर के रचनाकार सम्मिलित हैं। इतना ही नहीं, अपने काव्यगुरु हफ़ीज़ बनारसी साहब के प्रति उनके दिल में अगाध श्रद्धा है। वह कहीं भी हों, हफ़ीज़ साहब के गुणों का बखान करने का अवसर नहीं चूकते। गुरु के प्रति यह सम्मान बहुत कम रचनाकारों में देखने को मिलता है। मेरा मानना है कि गुरु का आशीर्वाद ही शिष्य को नित नई ऊँचाइयाँ छूने को प्रेरित करता है। कँवल जी ने हफ़ीज़ साहब की ग़ज़लों

का भी संकलन और संपादन कर उन्हें ‘क्या सुनाएँ हाले-दिल’ और ‘आज फूलों में ताज़गी कम है’ शीर्षक से प्रकाशित कराया है। अपने मृदु व्यवहार और परिश्रम के बल पर कँवल जी आज बिन थके साहित्यिक आकाश के ज़ीने निरंतर चढ़ रहे हैं।

मैं पहले भी निवेदन कर चुका हूँ कि रमेश कँवल जी सेवाकाल में विभिन्न महत्त्वपूर्ण पदों पर रह चुके हैं और बड़े निकट से समाज का अवलोकन किया है। इसलिए उनके अशआर में समाज प्रतिबिंबित होता है। गाँवों में आज भी सभी धर्मों और जातियों के लोग मिल-जुलकर रहते हैं। वहाँ न धर्मवाद है, न जातिवाद। न कोई अगड़ा है, न कोई पिछड़ा। सब लोग एक-दूसरे की सहायता करते हैं। शहरों में तो लोगों को पड़ोसी की भी जानकारी नहीं है, जबकि गाँवों में छप्पर भी मुहल्ले के सभी लोग मिलकर उठाते हैं। जाति व्यवस्था का तो कोई प्रश्न ही नहीं। एक सुंदर शे'र देखें-

रहते हैं सुख-चैन से दोनों ‘कँवल’
तुलसी और रैदास अपने गाँव में

प्रारब्ध बहुत महत्वपूर्ण है। इंसान की मेहनत अपनी जगह और उसकी क़िस्मत अपनी जगह। एक युवा ने अपनी माँ से पूछा-माँ तदबीर बड़ी है या तक़दीर? माँ ने कहा-बेटा तदबीर बड़ी है, बशर्ते कि तक़दीर साथ दे। अर्थात् मुक़द्दर के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। मनीषियों का कहना है कि किसी भी प्राणी का प्रारब्ध उसके पूर्व जनम के कर्मों के आधार पर ही बनता है। वरना क्यों एक बच्चा फ़ुटपाथ पर पैदा होता है और एक महलों में, जहाँ उसे सारी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं। झील के पत्थरों की क़िस्मत भी कुछ ऐसी ही है कि ले-देकर उनको एक ही जल में रहना है, जबकि नदी के पत्थरों की मुलाक़ात नित नई लहरों से होती रहती है-

मुझको धारे नदी के मिल न सके
झील के पत्थरों की क़िस्मत हूँ

बहुत सुखद महसूस होता है, जब रमेश जी सनातन का ध्वज लेकर अन्य रचनाकारों का मार्गदर्शन करते हैं। वह जानते हैं कि सनातनी व्यक्ति ही राष्ट्रधर्म की रक्षा कर सकता है। इसीलिए वह देश के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, श्री अमित शाह और योगी आदित्य नाथ जी के प्रशंसक हैं। वह जानते हैं कि इन महानुभावों का

हर कार्य देशहित में होता है, क्योंकि ये सनातन की मशाल लेकर राष्ट्र को विकास के मार्ग पर ले जा रहे हैं। पाँच शताब्दी बाद राममंदिर का निर्माण इस बात का सुबूत है कि अब देश में रामराज्य आने को है-

ध्वंस हो पाएगा कैसे
ये सनातन का क़िला है

राष्ट्रहित में कार्यरत कुछ
रहबरों का क़ाफ़िला है

सदियों के उत्सर्ग का फल
राममंदिर का सिला है

सनातन धर्म का झंडा है लहराया
फ़क़ीरों से मिलो उत्सव मनाओ तो

प्रस्तुत शे'र हर उस व्यक्ति के जीवन से जुड़ा है, जो नौकरीपेशा है। कवि ने अपने अंदाज़ में सार्वभौमिक सत्य कहा है। वास्तव में जब कार्यालय की फ़ाइलें शाम को घर तक आने लगें, तो परिवार के सदस्यों का विचलन स्वाभाविक है। साथ ही कार्य के बोझ से दबा व्यक्ति परिवार के दायित्वों का निर्वहन ठीक से नहीं कर पाता-

जब मैं दफ़्तर उठा के लाता हूँ
मुझको लगता है अनमना-सा घर

सकारात्मकता रमेश जी के अशआर का मूल स्वर है। वह अपने शे'रों में युवावर्ग के प्रेरणास्रोत के रूप में भी नज़र आते हैं। तभी तो वह कह उठते हैं-

ग़म के दस्तरख़्वान पर ख़ुशियाँ सजा सकता हूँ मैं
छाँव में काँटों की फूलों को खिला सकता हूँ मैं

पाश्चात्य संस्कृति ने भारतीय समाज के युवाओं पर कुप्रभाव डाला है। वर्तमान इंटरनेट के युग में तो व्यभिचार का कारण जहाँ सोशल मीडिया है, वहीं अश्लील

फ़िल्मों ने इस आग में घी का काम किया है। ऐसी घटनाएँ रोज़ समाचार पत्रों की सुर्ख़ियाँ बनती हैं-

आई मिस यू, आई लव यू वायरस के जाल में
फँसने वाली लड़कियों को कब बचा सकता हूँ मैं

संस्कार कहीं बाज़ार में नहीं मिलते। यह तो वह भावना है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी चली आती है। जब हम अपने बुज़ुर्गों का सम्मान करते हैं, तो हमारी संतानें हमें देखती हैं और हमसे उसी प्रकार का व्यवहार करती हैं। इसमें दो राय नहीं कि बुज़ुर्गों के आशीर्वाद से व्यक्ति का भाग्य सँवरता है-

पाँव बुज़ुर्गों के दाबे
भाग्य हमारे तब जागे

कवि ने अधोलिखित शे'र यानी मात्र दो पंक्तियों में ग़ज़ल के इतिहास का संक्षिप्त वर्णन कर दिया है। ग़ज़ल कभी तवायफ़ों के घुँघरुओं में क़ैद थी, लेकिन आज वह समाज के हर वर्ग की चहेती है। ख़ासतौर से निर्धन वर्ग की प्रबल पक्षधर बनकर खड़ी है और अपनी साहित्यिक ज़िम्मेदारियों का निर्वहन कर रही है-

शहरों के महँगे कोठों पर गुमसुम थी
चैन मिला निर्धन के घर जब आई ग़ज़ल

'अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें' ग़ज़ल-संग्रह में 92 ग़ज़लें, पाँच नज़्में और पाँच राम अभिनंदन गीत सम्मिलित हैं। आदरणीय रमेश 'कँवल' जी को पुस्तक के प्रकाशन के शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई।

माँ सरस्वती जी से प्रार्थना है कि वह इस पुस्तक के माध्यम से इनकी साहित्यिक ऊँचाइयों को और उन्नत करें।

दिनांक : 05.5.2024

डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज़'
-9/3, लक्ष्मीविहार, हिमगिरि कालोनी
काँठ रोड, मुरादाबाद-244001
मोबाइल : 99273-76877

बुनियाद पड़ रही है प्राचीन सभ्यता की

ग़ज़लों से मेरा जुड़ाव विगत 50 वर्षों से रहा है। साहिर लुधियानवी मेरे प्रिय कवि रहे हैं और आज भी हैं। मैं फ़िल्मी गाने सुन सुन कर ग़ज़लों की दुनिया की ओर आकर्षित हुआ। शकील बदायूनी, जाँनिसार अख्तर, इंदीवर, प्रदीप, नीरज, कैफ़ी आजमी, राजा मेंहदी अली खां आज भी मेरे दिलों-दिमाग़ पर छाए हुए रहते हैं। शुरुआती दिनों में मेरे उस्ताद वफ़ा सिकंदरपुरी रहे जो तड़क भड़क से दूर रहने वाले बेहद सादा दिल इंसान की मिसाल हैं। वे काँकीनारा, पश्चिम बंगाल में रहते हैं और उनसे मेरा संपर्क मेरे ग़ैर शायराना क़स्बा 'जगदल'में रहने के समय ही हुआ। अब तो सोच कर हँसी भी आती है कि मैं उस समय क्या लिखता था और क्या शायरी की समझ रखता था। उन्होंने मेरा हाथ पकडा और शायरी का क ख ग सिखाना शुरू किया। मैं वहाँ से शहर आरा आ गया। प्रशासनिक सेवा से सेवनिवृत होने के बाद जब मैंने उनकी सुधि ली तो पता चला कि उन्होंने अभी तक अपना कोई मजमुआ ही शाया नहीं करवाया है। उन्होंने अपना शे'री मजमुआ छपवाने पर कभी ध्यान ही नहीं दिया हालांकि वे आला दर्जे की शायरी करते हैं। बहुत इसरार के बाद उन्होंने अपनी ग़ज़लें मुझे भेजीं और मजमुआ शाया करवाने की इजाज़त दी। 'लहू का सफ़र'के नाम से उनका मजमुआ एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली से 2021 में उर्दू में प्रकाशित हुआ और काफ़ी मक़बूल भी हुआ।

आरा आने के बाद मैं प्रो. हफ़ीज़ बनारसी साहब (अब स्वर्गीय) से इसलाह लेता रहा। उर्दू में उनके कई मजमुए हैं लेकिन हिन्दी में उनका ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित करवाने का पुण्य मेरे नाम रहा। ग़ज़लों का संकलन तो वैसे उनके दामाद स्वर्गीय डॉ. ओबैदुर रहमान ने अपने जीवन काल में ही कर लिया था लेकिन उन्हें मूर्त रूप देने का सवाब मेरे हिस्से आया। उनके 2 मजमुए 'आज फूलों में ताज़गी कम है'और 'क्या सुनाएं हाले-दिल'एनी बुक प्रकाशन, नोएडा से 2023 में प्रकाशित हुए-

‘अक़ीदत के फूल’ (ग़ज़ल नज़्म) 2020 में,

‘2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें’: 600 ग़ज़लों का संकलन 2021 में,

21 वीं सदी के 21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें और एक रुक्नी अनूठी ग़ज़लें 2022 में,

2023 में अमृत महोत्सव की ग़ज़लें-75 रदीफ़ों पर ग़ज़लें और

वंदन ! शुभ अभिवंदन! देव स्तुति की कविताओं के संग्रह का सम्पादन किया।

क्या सुनाएँ हाले-दिल, और आज फूलों में ताज़गी कम है-हफ़ीज़ बनारसी की ग़ज़लों का संग्रह संपादित करने की कशमकश में मुझे अपनी शायरी पर ध्यान देने का मौका ही नहीं मिला कि मैं अपनी शायरी और अपने शे’री मजमुआ के बारे में सोच सकूँ। लिहाजा सावन का कँवल, और लम्स का सूरज 1997 में, शोहरत की धूप(हिंदी) 2013 में, रंग-ए –हुनर (उर्दू) 2016 में, स्पर्श की चाँदनी काव्य संग्रह (ग़ज़ल नज़्म) **2019 में प्रकाशित होने के बाद काफ़ी समय व्यतीत हो गया। खुशी की बात है कि श्वेतवर्णा प्रकाशन, दिल्ली से मेरे 2-2 ग़ज़ल संग्रह इतराती बलखाती ग़ज़लें और अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें इसी वर्ष प्रकाशित हो रहे हैं और मैं 24 बह्रों में 2024 की दिलकश ग़ज़लें** का सम्पादन भी कर रहा हूँ।

‘अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें’का विस्तृत विश्लेषण मेरे मित्र और ग़ज़ल के असलूब में महारत रखने वाले श्री विजय स्वर्णकार ने बखूबी किया है। उन्होंने वे जाविये भी तलाश कर लिए जिनसे मैं नावाक़िफ़ था। मेरे मित्र और आज के दौर के मेरे सर्वाधिक लोकप्रिय शायर श्री राजमूर्ति ‘सौरभ’ने मेरी शायरी के विविध आयाम पर कृपा दृष्टि डाली है। ईश्वर उन्हें स्वस्थ और दीर्घायु रखें। डॉ. कृष्ण कुमार ‘नाज़’ ने मेरी शायरी की प्रशंसा करते करते मेरे प्रति जो आदर निवेदित किया है मैं उसका ऋणी हो गया। इस अकिंचन को जो स्नेह और प्रेम साहित्य जगत ने दिया है वह अकल्पनीय है।

अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें में मैंने सनातन धर्मी आस्थाओं और विश्वास से जुड़ी परिकल्पनाओं को साकार करने की कोशिश की है। डिजिटल युग में तकनीक के बढ़ते प्रभाव ने सामाजिक ताने-बाने को कितना प्रभावित किया है इसे भी मैंने अपनी शायरी का कलेवर बनाने का प्रयास किया है। कहाँ तक मैं सफल हो सका हूँ यह आपकी प्रतिक्रियाएं मुझे बतायेंगी।

बुनियाद पड़ रही है प्राचीन सभ्यता की,
ऐसा हज़ारों बरसों तक में हुआ नहीं है।

स्नेहाकांक्षी

रमेश कँवल

संपर्क – 878 976 1287

1

अब कहाँ मधुमास अपने गाँव में
खो गया परिहास अपने गाँव में

नेट सोशल मीडिया से ज्ञान पा
छल रहे विश्वास अपने गाँव में

आमजन को धोखा देते फिर रहे
लोग हैं खुछ ख़ास अपने गाँव में

ताल हर घर जल नहर ज्यों ज्यों बढ़े
बढ़ रही है प्यास अपने गाँव में

डांडिया गरबा में आकर ग़ैरजन
दे रहे संत्रास अपने गाँव में

जब से आई नीति शिक्षा की नई
क्रम पलट इतिहास अपने गाँव में

अब सियासतदां न करते शर्म हैं
होता है उपहास अपने गाँव में

ऐसा कब हो पाया है कोई कृषक
खा लिया सल्फास अपने गाँव में

रहते हैं सुख-चैन से दोनों ‘कँवल’
तुलसी और रैदास अपने गाँव में

सृजन-6 अक्टूबर, 2022
यू ट्यूब पर डॉ. दुर्गेश उपाध्याय के स्वर में वीडियो

2

अब तक आँखों में वो ख़्वाब सुनहरे हैं
प्यार की शीतल छाया में हम ठहरे हैं

देख रहा हूँ मैं कजरारे नैनों को
तुम पर घर आँगन के पुख़्ता पहरे हैं

ट्रेन खुली तो तुम ने फ्लाइंग किस दे दी
फ़ोन भी करना बोल रहे दो चेहरे हैं

देख के तुमको मचले दिल में सौ अरमां
और लबों पर ख़्वाबों की कुछ मुहरे हैं

प्रेम सुधा संगीत इन्हें कब रास आए
दुनिया वाले तो बस गूंगे-बहरे हैं

जिन दरियाओं में तेरे थे साथ में हम
प्रीत के वास से अब भी सुगंधित लहरें हैं

राधा को जब याद किया मनमोहन ने
दर्द कँवल बंशी की धुन में गहरे हैं

सृजन : 6 सितम्बर, 2023

3

अक्षरों से शब्द बेकल हो गए
प्रीत के मधु गाँव जंगल हो गए

ख़त्म कर बैठे सकल संवाद हम
प्रेम के मृदु याम घायल हो गए

छाँव में इक पेड़ के बैठे रहे
फिर तथागत यश के पीपल हो गये

एक बाइक पर सिमटते दोस्त दो
लम्स के ख़ुशरंग बादल हो गये

दो बदन बाँहें गले में डाल कर
नृत्य रत पाँव की हलचल हो गए

पत्थरों की मानसिकता वालों में
रह के हम भी शीर्ष उप्पल हो गए

दस्तकों से रह के वंचित आज हम
खिड़कियों के बंद साँकल हो गए

थे सभी जूते में टाई कोट में
अपनी क़िस्मत में ये चप्पल हो गए

देशहित की बात करते हम 'कँवल'
कृष्ण के हाथों के उत्पल हो गए

सृजन-18 मार्च, 2023

4

आइए अब न शरमाइए
बैठिये कुछ क़रीब आइए

मत अँधेरे से घबराइए
गुनगुनाते हुए आइए

आइए दूर हो रंजो-ग़म
गीत ख़ुशियों के कुछ गाइए

मुस्कुराहट का ज़ेवर पहन
बन सँवर मेरे घर आइए

ज़िन्दगी का भरोसा नहीं
और ज़्यादा न तरसाइए

अपनी चाहत वफ़ा का असर
सारी दुनिया को बतलाइए

इन दिनों आप ख़ुश हैं बहुत
राज़ क्या है ये समझाइए

दस्तकें दीजिए रात दिन
नाम लब पर नहीं लाइए

जिसने चाहा 'कँवल' को सदा
एक दिन उसको बुलवाइए

सृजन : 23 फरवरी, 2024

5

आइए बैठिए
मुस्कुरा दीजिए

सोचते हैं बहुत
कुछ हमें बोलिए

फ़िक्र किस बात की
फ़िक्र मत कीजिए

यार की याद में
रात भर रो लिए

काशी मथुरा के दिन
आ गए आइए

राम मंदिर बना
गर्व कुछ कीजिए

दर्प का आईना
तोड़ भी दीजिए

देश सर्वोपरि
देशहित सोचिए

सब है मुमकिन 'कँवल'
हौसला कीजिए

सृजन 22 अप्रैल, 2024

6

आँखें, ज़ुल्फ़े, होंठ और गाल देखते रहे
हम विसाले-यार का जमाल देखते रहे

योग से निरोग का कमाल देखते रहे
चैनलों पे योगी का धमाल देखते रहे

जो उफ़क पे मौज-मस्ती में रहे रवां दवां
हम ज़मीं पे उनको ख़स्ता हाल देखते रहे

बन सँवर के आ गया वो रूपवान बाम पर
हम भी उसके हुस्न की मशाल देखते रहे

अंजुमन जो एक दिन उरूज पर था दोस्तो
एक शख़्स आया क्या ज़वाल देखते रहे

रह गए हदे-जुनून के मुग़ालते में हम
वे लबे-शऊर के सवाल देखते रहे

पंछियों के झुण्ड रुक न पाए शहरे-नाज़ में
धूल धूसरित तलैया ताल देखते रहे

धर्म की किताब में न जाने क्या लिखा मिला
ख़ूने-शहर में जो सब उबाल देखते रहे

हम 'कँवल' फ़िदा हुए यूँ उनके हाव-भाव पर
आईने में उनके ख़द्दो-ख़ाल देखते रहे

सृजन : 19 फ़रवरी, 2023

7

आगाज़ मुबाइल है अंजाम मुबाइल है
इंसान के हाथों में सुखधाम मुबाइल है

हर शख़्स की नज़रों में गुलफ़ाम मुबाइल है
ग़म हो कि मसर्रत हो इक जाम मुबाइल है

ललचाई निगाहों से क्यों देखें नहीं इसको
जादू का ये डिब्बा है पर नाम मुबाइल है

डिस्पैच करे कोई जब वीडियो कुछ बेजा
करता है कोई लेकिन बदनाम मुबाइल है

अपनों को पलों में ये इस्क्रीन पे है लाता
बिछड़ों को अदा करता आराम मुबाइल है

मैदान हो खेलों का धरना कि प्रदर्शन हो
हो जंग कि पूजा हो हर गाम मुबाइल है

खोए हुए रहते हैं इस तरह सभी इसमें
जैसे कि ये ईश्वर हो हर याम मुबाइल है

ये पाँच जी का टाइम आरंभ हुआ मित्रो
हाथों में लिया सबने अब थाम मुबाइल है

उज्जैन, अवध, मथुरा, काशी हो कि संगम हो
बजता है 'कँवल' अब तो हर धाम मोबाइल है

सृजन : 2 अक्टूबर, 2022

8

आँच के पास आ गया कोयला
अपनी हस्ती मिटा गया कोयला

काली रंगत से था उदास बहुत
फिर अंगीठी को भा गया कोयला

एक बर्तन में जल के होने से
अग्नि करतब दिखा गया कोयला

लाल अंगार बन गया पल में
आग में जब चला गया कोयला

भड़को जितना भी, बुझना है निश्चित
सत्य जग का बता गया कोयला

सदियों धरती में था दबा कुचला
हीरा हो कर लुभा गया कोयला

अपने ग़म की कहानियाँ कहकर
दिल 'कँवल' का दुखा गया कोयला

सृजन : 14 मार्च, 2023

9

आपकी बातों में आ गए
आप मन को मिरे भा गए

धूप छत पर थिरकने लगी
आप ज्यों ही नज़र आ गए

लम्स उनका मयस्सर हुआ
रूह पर वो मेरी छा गए

दिन को मेले तमन्नाओं के
शाम होते ही भरमा गए

दिल को किसकी नज़र लग गई
सारे सुख मुझको ठुकरा गए

क्या तरक़्क़ी सदी में हुई
युद्ध दुनिया के बतला गए

ज़िन्दगी मेरी थम सी गयी
सारे ग़म मुझसे टकरा गए

ऐसे आए 'कँवल' ज़ीस्त में
क़हर दिल पर मेरे ढा गए

सृजन 2 अप्रैल, 2024

10

आपके हुस्न की लताफ़त हूँ
लग़्ज़िश-ए-इश्क़ की इनायत हूँ

आब-ए-दरिया पे इक लकीर नहीं
पत्थरों पर लिखी इबारत हूँ

फ़ैसला करता हूँ गवाह बिना
दौर-ए-हाज़िर की मैं अदालत हूँ

मुझको अन्दर से तुम पुकारो तो
मैं हूँ बाहर तुम्हारी चाहत हूँ

मुझको धारे नदी के मिल न सके
झील के पत्थरों की क़िस्मत हूँ

मुझको प्रेम और दया फ़िज़ूल लगे
दौर-ए-नौ की मैं इक तिजारत हूँ

चाँद को थाल में उतारूँ 'कँवल'
एक बच्चे की ज़िद हूँ! जुरअत हूँ

सृजन-9 मार्च, 2023

11

आपको देखा जो मैंने ख़्वाब में
लुत्फ़-ए-मयकश है दिल-ए-शादाब में

देखिए फ़ितना 'बिपरजॉय'[1] का ये
शहर क्या बह जाएँगे सैलाब में

नक़्श जो छोड़ा था हमने वस्ल का
दाग़ है बेशक वही महताब में

फ़ेसबुक पर थे हज़ारों दोस्त पर
मैं अकेला था फँसा गिर्दाब में

मुश्किलों में फ़ासला रक्खा बहुत
दुश्मनों का रंग है अहबाब में

पंछियों के दल बड़ी हैरत में हैं
कैसे कम पानी बचा तालाब में

टूट कर मिलते है वो हमसे 'कँवल'
पर कहाँ इख़्लास है आदाब में

---

1. बिपरजॉय-एक भयंकर तूफ़ान

12

आप बताएँ क्या है सच
हमने तो जाना है सच

जिसने पहचाना है सच
झूठ को कब कहता है सच

आधा झूठ और आधा सच
कहिये तो रोता है सच

कह कर झूठ वो इतराए
बोले है ये सच्चा सच

आज सियासी लोग कहें
होता कहाँ है अच्छा सच

झूठ के बिस्तर पर बेबस
सोने को बेचारा सच

हमसे 'कँवल' मत कहिये अब
कैसे हमने भुगता सच

सृजन : 13 अक्टूबर, 2022

13

आप मेरे क़रीब आने लगे
फूल गुलशन के खिलखिलाने लगे

लब पे ज़ुंबिश हया निगाहों में
आप बाँहों में आ के जाने लगे

रूठना उनको भा गया बेहद
बात बेबात हम मनाने लगे

बात ख़ुशियों से कर रहा था मैं
ग़म दबे पाँव घर में आने लगे

आप आए तो सुख के सौ मौसम
मेरे जीवन में गुनगुनाने लगे

देख कर उनको ख़ुश हुआ बेहद
देखने में उन्हें ज़माने लगे

आपको पाया तो लगा ऐसा
हाथ में हुस्न के ख़ज़ाने लगे

धड़कनों में 'कँवल' बसे हैं जो
दूसरा शह्र अब बसाने लगे

सृजन : 29-12-2023

यू tube पर 5 मार्च, 2024 को बीना चटर्जी की आवाज़ में वीडियो अपलोड किया गया

14

आप से जब मन मिला है
मिट गया हर इक गिला है

चाहतों का सिलसिला है
फूल यौवन का खिला है

गोपियाँ यूँ ख़ुश हैं जैसे
उन को ही मोहन मिला है

ध्वंस हो पाएगा कैसे
ये सनातन का क़िला है

राष्ट्रहित में कार्यरत कुछ
रहबरों का क़ाफ़िला है

सदियों के उत्सर्ग का फल
राम मंदिर का सिला है

हैं 'कँवल' कुछ दुष्ट जिनसे
दुश्मनों को बल मिला है

सृजन : 23 फ़रवरी, 2024

15

आप से मेहरबान का वादा
दिल के नाक़द्रदान का वादा

हाज़िरी बन गयी नवाबों की
दर पे है पीकदान का वादा

दस्तरस में ज़मीं नहीं जिसकी
कर गया आसमान का वादा

कैंसर जिनको है वे कहते हैं
मत करो पान-वान का वादा

शोरगुल से बचें, बचाएँ भी
हाँ निभाएँ अज़ान का वादा

उनके घी और अचार की ख़ातिर
कीजिये मर्तबान का वादा

लौट आया है श्रीनगर में 'कँवल'
अम्न के ज़ाफ़रान का वादा

सृजन : 22 अक्टूबर, 2022

16

ओस पर धूप जब सँवरती है
ज़िन्दगी ओस की बिखरती है

शह्र जब जंगलों की सैर करें
कशमकश में बक़ा गुज़रती है

बात करते हैं सब हिफ़ाज़त की
बेख़ुदी सब पे वार करती है

चाँद हो जाता है ख़फ़ा जब भी
चाँदनी काँच से उतरती है

रेडिएशन भले ही जाँ ले ले
लत मोबाइल की कब सुधरती है

डेल्टा पर जिसे गया बाँधा
वो नदी आज भी बिफरती है

माजरा क्या है कुछ बताते 'कँवल'
रात क्यों रोज़ आह भरती है

सृजन : 7 सितंबर, 2023

17

इश्क़ में हम नाकाम हुए
ख़ास थे पर अब आम हुए

वादे सारे भूल गए
जो मस्ती के जाम हुए

झूठ की कश्ती में आकर
सारे सच गुमनाम हुए

रिश्तों की दुल्हन रूठी
घर भर में कोहराम हुए

देशविरोधी सब क़िस्से
ग़द्दारों के नाम हुए

आज बड़ों के बीच में भी
बच्चों से इल्ज़ाम हुए

रहबर दर दर फिरते हैं
वोटर तिश्नाकाम हुए

लू के थपेड़ों की साजिश
मतदाता बदनाम हुए

आँख कृतज्ञ हुए सबके
लब पे 'कँवल' श्रीराम हुए

सृजन : 1 मई, 2024

18

इशारा, तबस्सुम, नज़ाकत जवानी
हसीनाओं की है लताफ़त जवानी

हसीं सुर्ख़ गालों की लज्ज़त जवानी
रही काली ज़ुल्फ़ों की चाहत जवानी

जवां जल्द हो जाना चाहे लड़कपन
जईफ़ों के दिल की है हसरत जवानी

नहीं कोई डर नौजवानों के रहते
वतन की है हिम्मत जसारत जवानी

तरक़्क़ी की राहों ने स्वागत किया है
जो करने लगी ख़ुद हिमायत जवानी

धरा जल गगन पर हैं फहराए झंडे
रहे बेटियों की सलामत जवानी

शराफ़त से पेश आए तो सब है उम्दा
नशे में 'कँवल' सबकी आफ़त जवानी

सृजन : 7 अक्टूबर, 2022

19

ईंट गारे का था हमारा घर
आपने प्यार से सजाया घर

प्यार और स्नेह से इसे सींचा
पुष्प-पल्लव से है सजाया घर

दोपहर तक भले ही दूर रहे
शाम होते ही मन को भाया घर

शहर में होते हैं मकाँवाले
ख़ुशनसीबों ने सिर्फ पाया घर

दिन सुगन्धित किया समर्पण से
शाम को घर बनाया पूजा घर

जब मैं दफ़्तर उठा के लाता हूँ
मुझको लगता है अनमना सा घर

फ़र्क़ बाज़ार घर में कैसे हो
मैंने मंडी में ही बसाया घर

एक मुद्दत में हम बनाते हैं
ज़लज़ला पल में है गिराता घर

मुझको अफ्सोस नाम मेरा 'कँवल'
म्यूज़ियम में बदल न पाया घर

सृजन : 4 अक्टूबर, 2022 महानवमी

20

ईश्वर अंश भला इंसान
कितना बदल गया इंसान

जंगल जल जीवन सबको
नुक़साँ पहुँचाता इंसान

लूट के अपनी धरती को
चाँद पे जा पहुँचा इंसान

पर्वत नदियों झरनों को
वश में है करता इंसान

भटकाए कल तक था जो
दिखलाता रस्ता इंसान

सुख आराम से रहने को
कष्ट कई सहता इंसान

वन्दे भारत ट्रेन 'कँवल'
देश में अब चढ़ता इंसान

सृजन : 14 अक्टूबर, 2022

21

उजाले बाँटने जो चल पड़े हैं
मेरे दर पर वो नाबीना खड़े हैं

ये परदे रेशमी तो हैं यक़ीनन
मेरे सपनों के इनमें चीथड़े हैं

हवा लेकर हम आयेंगे सुगन्धित
ये वादा कर गए जो ख़ुद सड़े हैं

किये हैं सर क़लम लाखों का फिर भी
पढ़ा है हमने वो अकबर बड़े हैं

न दूरी है, न मुँह पर मास्क उनके
सभाओं में सियासतदां अड़े हैं

तरक़्क़ी कर रहा है मुल्क अपना
हर एक सू मील के पत्थर गड़े हैं

'कँवल' महबूब है बाँहों में मेरी
पलक झपके न यूँ नैना लड़े हैं

सृजन : नवरात्र कलश स्थापन 17 अक्तूबर, 2020

22

उनसे मिल कर भाव विह्वल हो गए
सब विरह के दाग़ ओझल हो गए

सादगी में प्यार की थी ताज़गी
गुफ़्तगू से उनकी क़ायल हो गए

गालों की लाली गुलाबी लब पे हम
सुरमई आँखों के काजल हो गए

मेरी ख़ुशियों के नगर थे अर्श पर
उनसे मिल कर ग़म रसातल हो गए

क़ातिलों में जब थे शामिल अपने जन
हो के बेबस हम भी घायल हो गए

हम पे अमृतकाल की मस्ती चढ़ी
हम तरक़्क़ी के हिमाचल हो गए

योगी बुलडोज़र चला ऐसा 'कँवल'
मुजरिमों के घर धरातल हो गए

सृजन : 19 मार्च, 2023

23

उसके तन में बसी हुई ख़ुशबू
मेरे कमरे में आ गयी ख़ुशबू

बेला चंपा की रजनीगन्धा की
यार की ज़ुल्फ़ों में सनी ख़ुशबू

आशकारा गुलाब कर बैठा
छुपके आई थी यार की ख़ुशबू

ग़ैरों अपनों में फ़र्क़ कर न सकी
सिलसिला प्यार का बनी ख़ुशबू

हिज्र की रातों में सुबकती है
वस्ल के नौबहार की ख़ुशबू

फ़िक्र काँटों का उसको था कितना
फूल से जब जुदा हुई ख़ुशबू

याद आता है घर की ढोलक पर
माँ के हाथों की थाप की ख़ुशबू

रंग टेसू के याद आते हैं
याद आती है फाग सी ख़ुशबू

जाम का था नशा 'कँवल' जिस दम
शरबती आँखों से उड़ी ख़ुशबू

सृजन : 7 अक्टूबर, 2022

24

उस से मिलना बेहद अच्छा लगता है
सबसे सुंदर उसका चेहरा लगता है

मेरी आँखों में सारा संसार है वो
दिलकश उसका हर नज़राना लगता है

भोलेपन से बातें करता है जब वो
उसका हर अंदाज़ भला सा लगता है

खूब मनाना आता है मुझको भी उसे
उसको अच्छा रूठ के जाना लगता है

रेत पे जब तस्वीर बनाता है मेरी
सपनों की जागीर में उलझा लगता है

खो जाता है रात को मेरी बाँहों में
चेहरा मेरा उसे सुहाना लगता है

चमक दमक बिजली कहती है बादल से
देख 'कँवल' मदमस्त दिवाना लगता है

सृजन : 28 फ़रवरी, 2024

25

कर के सुमिरन पकाई है रोटी
मेरी माँ ने बनाई है रोटी

भाई बहनों ने खाई है रोटी
प्रेम से मुस्कुराई है रोटी

जाने गुज़रें यहाँ से कब सैनिक
भाव विह्वल सजाई है रोटी

कामनाओं की धूम है दिल में
बीबी सज धज के लाई है रोटी

कोई राजा हो या भिखारी हो
सब ने क़िस्मत से पाई है रोटी

यान का हो सफ़र कि पैदल हो
सब की थाली में आई है रोटी

तोड़ने को चला हूँ मैं जो 'कँवल'
जाने क्यों सकपकाई है रोटी

सृजन : 14 अक्टूबर, 2022

26

करता आया अब तक पाप
कैसे होगा पश्चाताप

मेरी इक चुप हायल थी
व्यर्थ रहा उसका आलाप

देश तरक़्क़ी में मशरूफ़
महँगाई का व्यर्थ विलाप

सुख के बादल बरस गए
ख़त्म हुआ मन का संताप

थक कर चूर हुआ सागर
ग़म की गहराई को माप

बातचीत में खोए हैं
दो निर्मल मन शुद्ध प्रलाप

लगते थे आसान 'कँवल'
कितने जटिल मगर थे आप

सृजन : 19 मार्च, 2023

27

करना है कुछ-कुछ परिवर्तन संविधान में
लहराना है धर्म ध्वजा अब आसमान में

वक़्फ़ बोर्ड को करना होगा ख़त्म सदा को
नहीं है ऐसा बोर्ड कहीं मुस्लिम जहान में

इस्लामिक शरिया की बातें यहाँ न होंगी
यूसीसी लागू होगा हिंदोस्तान में

अल्पसंख्यकों का मंत्रालय ग़लत बना है
कहाँ ज़रूरी है यह समता के मकान में

मुस्लिम पर्सनल लॉ का बोर्ड विलोपित होगा
बेजा है इस तरह सोचना राष्ट्र ध्यान में

पूजास्थल अधिनियम बहुत षडयन्त्र बड़ा है
तोड़े गए सभी मंदिर हों प्रावधान में

तोड़ के मंदिर बने हैं जितने मस्जिद वसजिद
उनकी जगह पे मंदिर होंगे शान बान में

सारे शहर सड़क के नाम बदल जाएँगे
औरंगजेब न बाबर होंगे गुलिस्तान में

अब महान होंगे नहीं ढाए ज़ुल्म जिन्होंने
वीर शिवाजी, राणा होंगे अब महान में

गोरक्षा गोपालन का संकल्प सुनिश्चित
जग देखेगा अब भारत के खान-पान में

नष्ट करेंगे नामो-निशाँ ग़ुलामी के सब
'कँवल' सनातन रुचियाँ होंगी स्वाभिमान में

सृजन : 5 फरवरी, 2024

28

कहो! कैसे हुआ आना, बताओ तो
अँधेरी रात है, उलझन, सुनाओ तो

ये बारिश आँसुओं की जल्द अब रोको
मुझे छाता तबस्सुम के थमाओ तो

बदन पे तैरता सावन अजब लगता
मेरे एहसास की बाँहों में आओ तो

सनातन धर्म का झण्डा है लहराया
फ़क़ीरों से मिलो उत्सव मनाओ तो

नवाज़िश है करम रब का 'कँवल' मुझ पर
वो मेरा है ख़ुशी के गीत गाओ तो

29

काली रात का टीका चाँद
उजला उजला पीला चाँद

रफ़्ता रफ़्ता घटता चाँद
पूरा, पौना, आधा चाँद

दुख के पर्वत लाँघ गया
सुख की झील में उतरा चाँद

भूखे बच्चे की ख़ातिर
रोटी का इक टुकड़ा चाँद

राधा के मन भाता है
मोहन जैसा प्यारा चाँद

रूप पे अपने गर्व करे
तन कर हरदम रहता चाँद

बाँछें खिल गईं निर्धन की
आँगन में जब उतरा चाँद

यौवन कलश दिखाने को
दर्पण दर्पण भटका चाँद

चाँदनी से अभिसार करे
बादल से छन बहका चाँद

हँसुली, कंगन बन के ‘कँवल’
रात गगन में उभरा चाँद

सृजन : 6 अक्टूबर, 2022

30

किनारे खड़ा था भला आदमी
नदी में रहा डूबता आदमी

सदा दूसरों पर फ़िदा आदमी
रहा हीनता से घिरा आदमी

निखार उसमें आया ख़ुशी में कहाँ
ग़मों में बिखरता रहा आदमी

सियासत की बस्ती में गुमसुम रहा
क़यादत पे उतरा नया आदमी

इनायात ग़ैरों पे करता रहा
मुसलसल सगों को ठगा आदमी

ज़माने की मीज़ान पर जाने क्यों
रहा ग़ैरों को तौलता आदमी

ख़ुशी के अलम को उठाए हुए
मिला सोग में ग़मज़दा आदमी

पिचहत्तर बरस हो गए ऐ वतन
नया देश अपना नया आदमी

'कँवल' देश रफ़्तार में खो गया
पिछड़ता हुआ रह गया आदमी

31

किसी के लिये आशिक़ी है मुहब्बत
किसी के लिए मयकशी है मुहब्बत

किसी हुस्न की दिलकशी है मुहब्बत
किसी के लिए शाइरी है मुहब्बत

थपेड़ों से जो मौत की डर गया हो
उसे पूछिये ज़िन्दगी है मुहब्बत

जो राजी हों माबूद की ही रजा में
बताते हैं वे बंदगी है मुहब्बत

जो महरूम है शुद्ध ताज़ा हवा से
'कँवल' वे कहें ताज़गी है मुहब्बत

सृजन : 11 अक्टूबर, 2022

डॉ. दुर्गेश उपाध्याय द्वारा गाई हुई यू tube पर

32

किसी राहबर ने ये सच ही कहा है
ज़माना यहाँ कब किसी का रहा है

सवारी गगनयान की हो गई तय
'न हम जा सकेंगे' क़िला ये ढहा है

उदासी के जंगल हैं मन में दहकने
नगर में दरख़्तों का तन कट रहा है

हृदय में हैं क्यों ख़ुश महकमे ख़ुशी के
नयन से सजन ने बता क्या कहा है

तुझे देख कर ग़म की बारिश में तन्हा
मेरी आँखों से भी समुंदर बहा है

कहाँ फ़िक्र की उसने अपनी ख़ुशी की
किसी ने कहाँ माँ के जैसा सहा है

लुभाया इसे वेदना की दुल्हन ने
'कँवल' के लिए ज़िन्दगी क़हक़हा है

सृजन : 28 फ़रवरी, 2024

33

कुर्सियाँ हैं कहाँ फैला अख़बार है
धूप के फ़र्श पर बैठा दिलदार है

भोर का तारा चलने को तैयार है
हर हथेली पे सूरज का उपहार है

चाँदनी रात है, चाँद है झील में
मेरे बिस्तर पे तारों का अंबार है

तख़्त है नाव पर, छेद हैं नाव में
जलमहल में सजा मेरा दरबार है

धूल धरती पे छाए गगन पे घटा
आदमी के लिए उसका घर-बार है

इन दिनों है दुकानों पे मनहूसियत
अब 'अमेज़न' पे मस्ती का बाज़ार है

आज माहौल पर सोचिये कुछ 'कँवल'
शहर ज़हरीली वादी में लाचार है

सृजन : 24 अक्टूबर, 2020

34

ख़ुशनुमा लमहों के पंछी छत बदलते ही रहे
ग़मज़दा मौसम मेरे हमराह चलते ही रहे

माज़ी के सावन! सुहाने घन! मचलते ही रहे
याद की छतरी लिए हम तुम टहलते ही रहे

शक की गुंजाइश बनी जब से हमारे दरमियाँ
मुट्ठियों की रेत सी हम तुम फिसलते ही रहे

आप तो मनका के धागे थे, अलग जब से हुए
मोती मेरी ज़ीस्त के पग-पग निकलते ही रहे

बादलों की मेहरबानी धूप पर होती रही
मंज़र-ए-दिलकश से जग वाले बहलते ही रहे

यक-ब-यक मंज़िल बढ़ी क़दमों में अपने आ पड़ी
हम तो नक़्श-ए-राह पर बेख़ौफ़ चलते ही रहे

जिस को जो भी चाहिए सूरज ये देता है 'कँवल'
धूप गर्मी रौशनी लू आग फलते ही रहे

सृजन 10 जून, 2023

35

ख़ुशियों का दीदार है औरत
सपनों का संसार है औरत

प्रकृति का आधार है औरत
माँ का पहला प्यार है औरत

चाची फूआ दीदी मौसी
रिश्तों का विस्तार है औरत

साफ़ सफाई शिक्षा सेहत
घर में इक सरकार है औरत

बच्चों की बुनियाद यही है
ममता की मीनार है औरत

मर्दों का दिल विल रखने को
कर लेती श्रृंगार है औरत

देश की आधी ताक़त है ये
सोई नहीं बेदार है औरत

औरों को सुख देने में ग़म
कर लेती स्वीकार है औरत

सूना है घर-आँगन इन बिन
कैसे कहें बेकार है औरत

दीवाली छठ होली दशहरा
सच जानो त्यौहार है औरत

सोशल मीडिया पर ठग जाती
शोहदों से लाचार है औरत

जिस्मफरोशी, रेप, लफंगई
सौदों का बाज़ार है औरत

आदर-स्नेह 'कँवल' रखिये तो
सुख-सुविधा परिवार है औरत

सृजन : 9 अक्टूबर, 2022

36

खोकर पाने की आशा
जीवन की है परिभाषा

मर कर हम जाते हैं कहाँ
मन में है ये जिज्ञासा

आम चुनाव के वादों से
बढ़ जाती है प्रत्याशा

सबकुछ छोड़ यहीं जाना
क्यों अर्जन की अभिलाषा

भागा महिलाओं का भय
तुरही, ढोल बजे ताशा

मरुथल में जल बिन्दु कहाँ
रहना है जग को प्यासा

आभूषण अब ग्राम में हैं
ख़त्म हुआ तोला-माशा

चौसर का है खेल शुरू
फेंक रहे हैं सब पासा

बोलेगा किसका जादू
कौन 'कँवल' होगा पाशा

सृजन : 1 मार्च, 2024

37

ग़ज़वा-ए-हिन्द का इरादा है
ख़ौफ़ में इन दिनों इज़ाफ़ा है

बाबरी ज़ुर्म का लबादा है
राम भक्तों का ख़ौफ़ ज़्यादा है

देवबंदी की हसरतें देखो
इक तमद्दुन पे ज़ुल्म ढाता है

ज़हर नफ़रत का तिफ़्ल में भरना
मकतबों का अलग तक़ाज़ा है

परवरिश हिंदुओं के भारत में
और इसको बनाना 'गाजा' है

कौन क़ानून देश का माने
शरिया ही आख़िरी ठिकाना है

देशवालों! 'कँवल' को समझाओ
मथुरा काशी का अब इरादा है

सृजन : 23 फ़रवरी, 2024

38

ग़म के दस्तरख़्वान पर ख़ुशियाँ सजा सकता हूँ मैं
छाँव में काँटों की फूलों को खिला सकता हूँ मैं

ज़ालिमों के ज़ुल्म से बेशक बचा सकता हूँ मैं
साथ देकर आपकी हिम्मत बढा़ सकता हूँ मैं

हाथों में युवकों के अब पत्थर कहाँ है देखिये
दस्त में उनके हुनर आला थमा सकता हूँ मैं

बायोमेट्रिक हाज़िरी से है इज़ाफ़ा काम में
टेक्निक से इक नया भारत बना सकता हूँ मैं

टिमटिमाते जुगनुओं की बस्तियों की ख़ैर हो
एक सूरज हूँ उन्हें पल में बुझा सकता हूँ मैं

आई मिस यू, आई लव यू वायरस के जाल में
फँसने वाली लड़कियों को कब बचा सकता हूँ मैं

फ़िक्र के दफ़्तर में शोहरत की उगाही के लिए
देश को परदेश में गाली सुना सकता हूँ मैं

कौन कहता है 'कँवल' सारे मुख़ालिफ़ मिल गए
अब भी उनको एक दूजे से लड़ा सकता हूँ मैं

सृजन : 8 जून, 2023

39

गर्दिश से निकल आया है क़िस्मत का सितारा
अब झूमेगा हर सिम्त सखावत का सितारा

ख़ुशबू के नगर में है मुहब्बत का सितारा
लो टूट गया ज़ुल्म की दहशत का सितारा

हर चीज़ मयस्सर थी मेरे बाज़ू के दम पर
मैं ढूँढता फिरता रहा क़िस्मत का सितारा

बाज़ू में मेरे साथ रहा चाँद सा मुखड़ा
मैं शहर में गिनता रहा उल्फ़त का सितारा

पाबंदी लगाईं गई तंज़ीम पे जिस दम
बस दफ़्न हुआ उनकी बग़ावत का सितारा

हासिल हुई दरवेश की नज़रों की इनायत
आकाश पे चमका मेरी शुहरत का सितारा

सब झोलियाँ भरने मे थे मसरूफ़ 'कँवल' जब
रोशन था जहाँ में मेरी दौलत का सितारा

सृजन : 10 अक्टूबर, 2022

40

घर के बाशिंदों की अनबन बढ़ गयी है
रेशमी पर्दों की उलझन बढ़ गयी है

स्वाद में आने लगी है उम्दगी कम
बर्तनों की जब से खनखन बढ़ गयी है

मुफ़लिसों की अर्ज़ियाँ मायूस हैं अब
पैरवी-रिश्वत की अकड़न बढ़ गयी है

इन दिनों तारी है फैशन का नशा यूँ
जिस्म से कपड़ों की उतरन बढ़ गयी है

अर्श पर है अब अमेज़न का प्रलोभन
शहर के बिज़नेस की फिसलन बढ़ गयी है

मंच पर दूल्हे के खेमे में है हलचल
अब लिए जयमाल दुल्हन बढ़ गयी है

जब से आने का किया है उसने वादा
क्यों 'कँवल' के दिल की धड़कन बढ़ गयी है

सृजन : 9 मार्च, 2023

41

चूम कर आ गया नयन उसका
काँपता रह गया बदन उसका

स्वच्छ उजला तो है वसन उसका
साफ़ कब हो सकेगा मन उसका

अब प्रदूषण से देश हो रक्षित
शोर से मुक्त हो गगन उसका

वस्ल-ए-रब तो है अस्ल में जीवन
हिज्र-ए-तहज़ीब है कफ़न उसका

शोर की वहशतों की दहशत है
कब सुकूँ पाएगा वतन उसका

हम भी पलकें बिछाए बैठे हैं
जाने कब होगा आगमन उसका

किस सलीक़े से पढ़ रहा है ग़ज़ल
किस बुलंदी पे है सुख़न उसका

बंदिशों का है दख़्ल हसरत पर
है ख़फ़ा कब से गुलबदन उसका

कह रहा है 'कँवल' से शोख बदन
आज भर दीजिए न मन उसका

सृजन : 2 मार्च, 2024

42

जब तक मेरे पास रहा
मौसम भी मधुमास रहा

शबनम घास से दूर हुई
धरती का उपहास रहा

यह आभास हुआ मुझको
यौवन भर सन्यास रहा

आभासी सब महफ़िल थे
एकाकीपन पास रहा

सत्ता के लफड़े थे सब
सत्ता में विश्वास रहा

प्रीत पराई प्रेमी से
मिसरा में अनुप्रास रहा

तुलसी सूर कबीर को सुन
चंचल मन रैदास रहा

न्यायालय के चक्कर मे
जीवन भर संत्रास रहा

चंद्रयान का शशि दर्शन
एक सफल अभ्यास रहा

मन हिन्दू जब हुआ 'कँवल'
जीवन में उल्लास रहा

सृजन : 30 अगस्त, 2023

43

जब फेंके कोई मुझ पे तेरे नाम का पत्थर
देता है बहुत दर्द वो इलज़ाम का पत्थर

अफ़साना, कहानी सभी हो जाते हैं रौशन
जब फेंकते हैं वो लब-ए-गुलफ़ाम का पत्थर

बे लुत्फ़ नज़र आते हैं लज्ज़त के दरीचे
जब यार से उलझे दिले-बदनाम का पत्थर

मधुशाला की चौपाई कि ख़ुशियों की रुबाई
हासिल हो तभी जब मिले खैयाम का पत्थर

सच्चाई छुपाने से कभी छुप नहीं सकती
पानी में दिखाई दिया शिवनाम का पत्थर

पत्थर को तराशा गया इस दस्त-ए-हुनर से
न्यारा है अवध में बड़ा श्री राम का पत्थर

आग़ाज़ 'कँवल' उनके इशारों का था दिलकश
पर दिल में महकता रहा अंजाम का पत्थर

सृजन : 22 अक्टूबर, 2022

44

जब से इस दिल को भा गयी मिट्टी
आसमाँ को लुभा गयी मिट्टी

उड़ते रहते हैं अन्तरिक्ष में जो
उनको मंज़िल दिखा गयी मिट्टी

हीरा मोती भी सोना चाँदी भी
देख मेहनत उगा गयी मिट्टी

पेश कर हाल सूखे दरके हुए
बारिशों को लुभा गयी मिट्टी

लग गयी आग जब गगनचुम्बी
जलमहल में बुझा गयी मिट्टी

ज़िन्दगी को सँवारने के लिए
चाक पर लड़खड़ा गयी मिट्टी

ऐशो-आराम धूल उड़ाते रहे
दिल 'कँवल' को थमा गयी मिट्टी

सृजन : 2 अक्टूबर, 2022

45

ज़िंदगी की उलझनों का हल बताया
प्यार से उसने मुझे अपना बनाया

लिंक कर आधार से दिल को हमारे
धड़कनों पर प्यार से क़ब्ज़ा जमाया

मेवा, फल, मिष्ठान मेरे सामने रख
आज है उपवास व्रत उसने बताया

धन उजालों का लुटाने की ख़ता में
रात को सूली पे सूरज को चढ़ाया

सारे रहबर सोचते हैं देशहित में
यह इलेक्शन की घटाओं ने जताया

जंगलों से दूर हरियाली को पाकर
पर्वतों ने टूट कर दुखड़ा सुनाया

आंधियों ने साज़िशों के जाल बुनकर
मंदिरों के सारे दीपक को बुझाया

कहते हैं ईमान के कट्टर हैं वे सब
लूट कर बस्ती को मस्ती में बताया

मैं 'कँवल' सुनता रहा उसकी कहानी
उसने मुझको मेरा ही क़िस्सा सुनाया

सृजन : 7 अप्रैल, 2024

46

जो समर्पित थे कल तक बदलने लगे
वक़्त बदला तो ज़हर अब उगलने लगे

शबनमी घास का हुस्न बेकल हुआ
सर्द पत्तों पे बादल मचलने लगे

मतलबी दौर है ख़ुद गरज़ है फ़िज़ा
लोग पाला पे पाला बदलने लगे

बात करने में कोई मज़ा न रहा
बेअदब बदज़ुबां लोग खलने लगे

वक़्त कम है मगर काम तो कम नहीं
सोच कर हम उसूलों पे चलने लगे

साहबों की हथेली में खुजली हुई
नोट फ़ाइल में ख़ुद ही उछलने लगे

होटलों में 'कँवल' प्लेट मलते हुए
देख बचपन नयन द्वय पिघलने लगे

सृजन : 24 जून, 2023

47

डिजिटल करे पढ़ाई ग़म
बोलें सभी बधाई ग़म

ख़ुशियों के मौसम में भी
काटे बहुत मलाई ग़म

ज़ार ज़ार रोये मन जब
बेटी करे बिदाई ग़म

आहिस्ता से आ पहुँचे
देते नहीं दिखाई ग़म

ख़ुशियों से महरूम करे
कर लेवे जो सगाई ग़म

कितना भी नासाज़ रहूँ
माँ कर दे तुरपाई ग़म

ग़म को चाहे कौन 'कँवल'
कर ले भले बड़ाई ग़म

सृजन : 14 अक्टूबर, 2022

48

डूबने वालों में उसका नाम है
इक शिनावर[1] का अजब अंजाम है

फाँकता था गर्द वो जिस राह की
वो सड़क उस अजनबी के नाम है

आ न जाए पाँव के नीचे कोई
सूखे पत्तों में मचा कुहराम है

शुहरतें ग़ज़लों ने यूँ बख़्शी उसे
रात-दिन घर में न रहना आम है

है सदा उनको रिआयत की तलब
कुछ पहुँच वालों में उनका नाम है

औरों की ख़ुशियों में जो रहते हैं ख़ुश
उनके रुख़ पर रौनक़-ए-इल्हाम[2] है

लोग आये हैं चुनावी भीड़ में
अब करोना ही 'कँवल' अंजाम है

सृजन : 19 अक्टूबर, 2020

1 तैराक
2 ईश्वरीय चमक

49

तुमसे मिलने का इरादा
है बहुत प्यारा इरादा

कुछ न होगा सोचने से
जब नहीं करना इरादा

फूलों को रखना सुरक्षित
है ये काँटों का इरादा

आपके दिल को दुखाना
था कहाँ मेरा इरादा

मुफलिसों के मन में भी है
घर बनाने का इरादा

राम मंदिर बन गया है
अब है मथुरा का इरादा

है 'कँवल' दिल्ली का अब तो
सेंट्रल विस्टा इरादा

सृजन : 12 अक्टूबर, 2022

50

कोरोना ने जमकर मचायी तबाही
इलाही, इलाही, इलाही, इलाही

सभी को है फ़ुर्सत मिलन पे मनाही
है बेचैन मन बंद है आवाजाही

मिली महफ़िलों में उसे वाहवाही
तरन्नुम की मलिका से जिसने निबाही

लबों पर तबस्सुम[1] की कलियाँ सजी हैं
दिलों में मसर्रत[2] की है बादशाही

चमकता है सर पर सफ़ेदी का सूरज
मेरे बालों पर अब नहीं है सियाही

शबे-वस्ल होंठों पे है 'जाने दो' पर
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'

गुनाहों की मस्ती में हलचल मची है
कि ड्रग क्या पता लाए कितनी तबाही

---

1 मुस्कराहट
2 प्रसन्नता

बड़े लोग झुकते हैं मिलने की ख़ातिर
भरे है गिलासों को जैसे सुराही

‘कँवल’ इन दिनों फ़िक्र-ए-दहक़ां[1] में गुम हैं
दलालों में है ख़ौफ़-ए-ज़िल्ले-इलाही[2]

---

1 किसानों की चिंता

2 शासन (बादशाह) का भय

51

तू उधर था, इधर हो गया
ख़ूबसूरत सफ़र हो गया

आँख नम हो गई क्यों तेरी
क्या कोई दर बदर हो गया

चाँदनी खिड़कियों पर मिली
चाँद आशुफ़्ता सर हो गया

बेबसी बेरुख़ी बन गई
जब से मैं मो'तबर हो गया

मुझ पे उसका करम है 'कँवल'
वो मेरा हम सफ़र हो गया

डॉ. कमलेश हरिपुरी द्वारा गाई ग़ज़ल यू ट्यूब पर

52

इस इश्क़ से नशीला कोई नशा नहीं है
उल्फ़त से बढ़के हमदम कोई मज़ा नहीं है

महताब के उजाले से दो बदन हैं रोशन
दीपक से दूर होकर कोई गिला नहीं है

खारे समुंदरों से मीठी नदी का मिलना
इस हौसले से बढ़ कर कोई हौसला नहीं है

सूरज को छोड़कर सब लौट आये घोंसलों में
उसे त्यागना जो डूबे कोई ख़ता नहीं है

तय कर रहा वतन है हर रोज़ एक मंज़िल
इस राहबर से बढ़कर कोई हमनवा नहीं है

बुनियाद पड़ रही है प्राचीन सभ्यता की
ऐसा हज़ारों बरसों तक में हुआ नहीं है

है आपकी नवाज़िश है आपकी इनायत
सच है 'कँवल' जहाँ में कोई आप सा नहीं है

सृजन : 27 फ़रवरी, 2024

53

मेरी मुट्ठी में चारों धाम आए

"तेरे ख़त जब भी मेरे नाम आए"
मेरी मुट्ठी में चारों धाम आए

हुकूमत से जो भी इनाम आए
ग़रीबों के न कोई काम आए

किए सब राज़ अफ़शां आँसुओं ने
दिले-आशुफ़्ता पे इल्ज़ाम आए

सवेरे से लगे थे दिल में मेले
ढली जब शाम तिश्नाकाम आए

शिकन बिस्तर की ख़ामोशी में गुम है
न जाने तन को कब आराम आए

तसव्वुर में हमारे साथ हो तुम
हक़ीक़त में कभी वह शाम आए

इन आँखों ने किया जब तब इशारा
शिगुफ़्ता लब के भी पैग़ाम आए

पवनसुत ने सुनाई राम धुन क्या
लगा सीता को उनके राम आए

तरक़्क़ी के 'कँवल' दीपक जलाकर
किसी रहबर के सर इल्ज़ाम आए

सृजन : 9-9-2023

डॉ. दुर्गेश उपाध्याय की आवाज में वीडियो यू ट्यूब पर अपलोड है

54

थोड़ी ख़ुशी, क्यों बेसी ग़म
सोच के व्याकुल हो गये हम

शीतलता हो जाय न कम
फूलों पर बरसी शबनम

दिल में इक बेदिल क्यों है
सोच के आँखें हो गईं नम

पथरीली राहों ने कहा
आगे है सुख का मौसम

संगमरमर सी शिलाओं पर
शिल्प कुशलता है अनुपम

उसके सिवा कोई और नहीं
दावा करे है एक धरम

राम का मंदिर देखो 'कँवल'
तन-मन-धन का है संगम

सृजन-14 जनवरी, 2024

55

इश्क़ का आँगन इधर गुलज़ार है
दर्द का लश्कर उधर तैयार है

हर तरफ़ जब लूट का बाज़ार है
होश में रहिए यही दरकार है

पत्थरों की ज़द में आता ही नहीं
आजकल का आइना हुशियार है

एक मिसरा क्या ज़ुरूरत का पढ़ा
सामने एहसान का अख़बार है

क़ाफ़ियों मिसरों की जब तज़ईन[1] हो
फिर तग़ज़्ज़ुल ज़ीनत-ए-अशआर[2] है

आलम-ए-मस्ती का मौसम देखकर
झूमता गाता मेरा दिलदार है

मन मुताबिक़ एप डाउनलोड हैं
हुबहू दिख़ता कहाँ किरदार है

फूल से ख़ुशबू जुदा करने की ज़िद
रायगाँ है, कोशिशे-बेकार है

ख़ूबसूरत है यक़ीनन ज़िन्दगी
हाँ! 'कँवल' को ज़िन्दगी से प्यार है

सृजन : 24 अक्टूबर, 2020

---

1 शृंगार, साज-सज्जा

2 शे'र की शोभा

56

दर्द की भाषा पढ़ो
भावनाओं में बहो

कुछ सुनाएँ अपनी हम
तुम भी कुछ अपनी कहो

बाँहों के हैं दायरे
आओ इनमें ख़ुश रहो

अपनी पेशानी पे अब
इक शिकन पड़ने न दो

शबनमी मलबूस है
दूर सूरज से रहो

नफ़रतों के शहर में
प्रेम की ख़ुशबू भरो

लम्स के अल्फ़ाज़ से
ओस पर ग़ज़लें कहो

कैसी है जम्हूरियत
आईने से पूछ लो

है ज़मीं बंजर 'कँवल'
हल चलाना छोड़ दो

सृजन 18 जून, 2023

57

नगर, गाँव, बस्ती जलाने से बचिए
सनातन को गाली सुनाने से बचिए

चुनावों के पश्चात रहना है संग में
सफल हो के आँसू बहाने से बचिए

किसे पूजना है कहाँ आस्था हो
ये ज़ाती मसायल सुझाने से बचिए

इजाज़त न इस्लाम देता है हमको
मज़ारों पे चादर चढ़ाने से बचिए

किसे ढूँढते आप बाहर रहेंगे
जो घर में हैं उनको छुपाने से बचिए

बहुत सभ्य सुंदर हैं 'मानस' में बातें
इसे साइनाइड बताने से बचिए

चमन जल गया तो बचेगा न कुछ भी
'कँवल' आग में घी गिराने से बचिए

58

नज़र से आरती तेरी उतारूँ
चले आओ तुझे पलभर निहारूँ

तुझे पाकर ख़ुशी है बेतहाशा
मैं तेरे रूबरू तुझको पुकारूँ

तुम्हें पाकर तमन्ना सर उठाये
तुम्हारे बिन न अब जीवन गुज़ारूँ

तुम्हारे साथ बीती है घड़ी जो
भला उस पल को मैं कैसे बिसारूँ

सड़क पर है प्रदूषण शोरगुल का
मैं कानों से इन्हें कब तक दुलारूँ

ज़बरदस्ती की ज़िद पर है जो मज़हब
उसे मैं अम्न का वैरी पुकारूँ

'कँवल' हो फ़ेल साज़िश दुश्मनों की
सनातन धर्म को ऐसे सवारूँ

सृजन : 30 जुलाई, 2022

59

निगाहों में बसी है तेरी मूरत
मेरे दिल को नहीं औरों की चाहत

कहीं लगती नहीं मेरी तबीयत
मुझे मिलती है बस तुमसे ही राहत

है मेरी ज़िन्दगी तेरे हवाले
तुम्हारे नाम दिल ने की वसीयत

मिलो, मिल कर बिछड़ जाओ ख़ुशी से
विरह का दर्द रहने दो यथावत

मुझे दो पेड़ बनकर छाँव ठण्डी
कुँवर से अब बना डालो तथागत

यही तारीख़ से सीखा है हमने
नहीं भूलें कभी अपनी विरासत

'कँवल' जयचंद की दुहराने साज़िश
वतन से लोग जाते हैं विलायत

सृजन : 20 मार्च, 2023

60

पाँच जी की ही चल रही है हवा
तेज़ रौ धुन में ढल रही है हवा

बदला बदला है नक़्शा गुलशन का
ख़ारो-ख़स को मसल रही है हवा

मदरसों का निज़ाम और चलन
बाद मुद्दत बदल रही है हवा

सोचती थी बुझा के दम लेगी
दीप जल उट्ठे जल रही है हवा

धूप का लुत्फ़ छत पे लेते हुए
रफ़्ता रफ़्ता टहल रही है हवा

उसके बाज़ू में शोला है कोई
बर्फ़ पहने मचल रही है हवा

लग न जाए बदन में आग 'कँवल'
दिल का मौसम बदल रही है हवा

सृजन : 2 अक्टूबर, 2022

61

पाँव बुज़ुर्गों के दाबे
भाग्य हमारे तब जागे

कमरे में जब ख़्वाब मिले
टांग दिया कोने कोने

एक पहर बरसे बादल
सड़कों पर नाले उतरे

इत्र की शीशी खोल दिया
ख़ुशबू के ज़ेवर झूमे

दर्द-ओ-ग़म की खूँटी पर
सूख गए अरमाँ सारे

चाँद मिला चौराहे पर
यादों के दफ़्तर खोले

मुट्ठी में रह पाए कहाँ
जुगनू के लश्कर भागे

हुई चाँदनी बेहद ख़ुश
माँग में जब तारे टांके

कोई शनासा मिला नहीं
हमने 'कँवल' जी भर परखे

सृजन : 24 जून, 2023

62

फूल ख़ुशबू से समाहित हो गए
देवचरणों मे सुशोभित हो गए

पेड़ पौधे जब सुरक्षित हो गए
लोग फिर कितने व्यवस्थित हो गए

शह्र का ज़हरीला है वातावरण
नागरिक ख़ुशियों से वंचित हो गए

नाम पर इक शख़्स के गतिरोध है
इसलिए सब कार्य बाधित हो गए

मुंबई की जैसे लोकल ट्रेन हो
आप मेरे दिल में पूजित हो गए

है ये अमृतकाल कैसे दिन फिरे
मुल्क के रहबर विलोपित हो गए

रख सका अंकुश न जो लब पर 'कँवल'
उसके पल क्षण में तिरोहित हो गए

सृजन : 28 मार्च, 2023

63

बड़े ही ख़ूबसूरत हैं, बड़े प्यारे मज़े के दिन
जो गुज़रे संग तेरे सच में हैं वे ही सुनहरे दिन

तेरे साँसों की ख़ुशबू जब मुझे झूले झुलाती है
सुगन्धित पुष्प वन में याद आते हैं सुहाने दिन

मिले छुटकारा कैसे राह में कोई ये बतलाए
तेरी यादें, दुपहरी जेठ की, अलसाये मेरे दिन

लगाते हैं जो भारत तोड़ने के नारे शहरों में
वो एयर कूल रथ पर गिन रहे हैं एकता के दिन

इनायत पादरियों पंडितों मुल्लाओं की होगी
नसीहत से न जो मैले करें शतदल के उजले दिन

सनातन धर्म की जब हो चतुर्दिक जय भला इससे
कहाँ होंगे कभी बढ़कर बताएँ आप अच्छे दिन

'कँवल' लहरा के परचम होशियारी और हिम्मत का
सुरक्षित कर लिए नभ, जल, धरा पर बेटियों ने दिन

सृजन : 5 अक्टूबर, 2022
विजयादशमी

64

बदला बदला सा है मेरा दफ़्तर
रूप सज्जा में है नया दफ़्तर

बायोमेट्रिक से लोग आते हैं
सीसीटीवी लगा हुआ दफ़्तर

लैपटॉपों के साथ सिस्टम भी
फ़ाइलों से हुआ जुदा दफ़्तर

फ़ाइलें पल में ढूँढ लेते हैं
जल्द निपटाता है भला दफ़्तर

आँसुओं ने लगा दिया जमघट
मेरी यादों का जब खुला दफ़्तर

मुजरिमों की न हो ज़मानत जब
जेल में खोलें ज़ुल्म का दफ़्तर

फ़ाइलें देख अहलिया ने कहा
घर 'कँवल' बन न पायेगा दफ़्तर

सृजन : 11 अक्टूबर, 2022

65

बरसों बाद ज़मानत पर है आई ग़ज़ल
लाज से दोहरी हो गई है सकुचाई ग़ज़ल

जीवन के अनुभव को ढाल के शे'रों में
मंचों पर इस दौर में है इतराई ग़ज़ल

नुक्कड़ पर के चाय के संग बल खाती है
होटल में क़ालीनों पर घबराई ग़ज़ल

तुकबंदी की गलियों में हैं भटक रहे
पर दुष्यंत सी प्यारी कब हो पाई ग़ज़ल

शहरों के महँगे कोठों पर गुमसुम थी
चैन मिला निर्धन के घर जब आई ग़ज़ल

सागर मंथन करते रहती है हरदम
अमृतघट जो मिला हँसी, मुस्काई ग़ज़ल

कृष्ण 'कँवल' रहते हैं रथ पर गाइड जब
अर्जुन तब कह पाता है मनभाई ग़ज़ल

सृजन : 8 अक्टूबर, 2022

66

बाग़ में मिली बहार
हर तरफ़ दिखी बहार

जिस्म तक रुकी कहाँ
रूह पर टिकी बहार

मुफ़लिसों के पार्क में
देखिये मिली बहार

प्लास्टिक के शह्र में
आ नहीं सकी बहार

पर्वतों की चोटियों
से फिसल गई बहार

खो गई ज़मीन में
शह्र-गाँव की बहार

अब 'कँवल' न ढूँढिए
स्वर्ग चल बसी बहार

सृजन : 14 अक्टूबर, 2022

67

बे-हद मालामाल हुआ
जीवन ये ख़ुशहाल हुआ

तुम सुगंध बन साथ रहे
ज्यों पूजा का थाल हुआ

सुख वैभव की मंडी में
पाकर तुम्हें निहाल हुआ

उलझन की रणभेरी बजी
साथ तुम्हारा ढाल हुआ

सिरहाने दुख आए कई
हरगिज़ नहीं मलाल हुआ

मस्ती में हँसते गाते
आज छियालिस साल हुआ

तुम जो 'कँवल' के साथ रहे
अद्भुत प्रेम मिसाल हुआ

सृजन : 22 जून, 2024

68

भरी हुई थी मेरी आँख, हँस रहा था वो
उदासियों का नया कोई मरहला था वो

लबों पे झूठी तबस्सुम सजा के लाया था
सुख़न में दर्द का बेलौस तज़किरा था वो

नज़र झुका के सभी तजरुबा बता डाला
हमेशा अपनों की साज़िश का तबसिरा था वो

ख़मोश हो के गवाहों के झूठ सुनता रहा
किसी बिके हुए मुंसिफ़ का फ़ैसला था वो

हर एक रहनुमा क़िस्सा-ए-ज़ुल्म सुनता रहा
'कँवल' भरोसा था उनपर सुना रहा था वो

सृजन : 5 मार्च, 2024

69

मुँह पे गमछा बाँधने की ठान ली
गाँव ने दो गज़ की दूरी मान ली

आपदाओं में भी अवसर खोजना
यह कला भी देश ने पहचान ली

मास्क, सैनीटाइज़र बनने लगे
देश ने किट की चुनौती मान ली

ट्रेन मज़दूरों की ख़ातिर चल पड़ीं
बच्चों ने घर पर सुखद मुस्कान ली

शहर से जब सावधानी हट गयी
दारू ने लोगों की हाय जान ली

कुछ मसीहा जब गले मिलने लगे
मौत ने दहशत की चादर तान ली

थी क़यादत मोदी की जग को 'कँवल'
राह भारतवर्ष ने आसान ली

सृजन : 17 मई, 2020

70

मुहब्बतों का क़ुसूर है ये
नफ़ासतों का ग़ुरूर है ये

ये अंजुमन है वतन का दुश्मन
सियासतों का सुरुर है ये

ये ज्ञान का घर बताते ख़ुद को
अवैध फ़तवा हुज़ूर है ये

है नाज़ ग़जवा-ए-हिंद पर तो
लियाकतों का शुरूर है ये

वतन को करते नमन नहीं हैं
ये फ़ितना गर हैं फ़ुतूर है ये

इनायतें हों ख़ुदा की इस पर
ख़ुदा की रहमत से दूर है ये

ये इल्तिज़ा है 'कँवल' वतन की
रहो जो मिल जुल तो नूर है ये

सृजन : 24 फ़रवरी, 2024

71

मेरी आँखों में आ गए आँसू
ग़म का क़िस्सा सुना गए आँसू

जबसे बेदख़्ल है ख़ुशी उसकी
उसकी आँखों को भा गए आँसू

सामना ग़म से जब हुआ उसका
सुर्ख़ रुख़ को भिगा गए आँसू

बैन जब अंजुमन हुआ कोई
साज़िशों को गला गए आँसू

बारिशों से ये काम हो न सका
आतिश-ए-दिल बुझा गए आँसू

मेरी ख़ुशियों की इंतिहा न रही
जब दुखों को मिटा गए आँसू

मीर का दर्द पीर मीरा की
चुटकियों में उड़ा गए आँसू

देखते ही व्यथा विसर्जन की
झील नदियों पे छा गए आँसू

द्रौपदी को 'कँवल' पता न चला
कृष्ण पर क्या न ढा गए आँसू

सृजन : 2 अक्टूबर, 2022

72

मेरे घर आई ख़ुशी
ख़ूब इतराई ख़ुशी

महफ़िलों के तंज़ से
काफ़ी घबराई ख़ुशी

ग़म के दस्तरख़्वान पर
खा नहीं पाई ख़ुशी

अजनबी बर्ताव थे
जब भी घर आई ख़ुशी

मुफ़लिसों के ख़त कहाँ
पढ़ कभी पाई ख़ुशी

उलझनों के गाँव में
कब ठहर पाई ख़ुशी

गाँव का घर छोड़कर
फ्लैट में आई ख़ुशी

था बताशे का मज़ा
जब भी मुस्काई ख़ुशी

दिलबरों की बज़्म में
ढोल ले आई ख़ुशी

शौक़ से हमने 'कँवल'
बाँटी घर आई ख़ुशी

सृजन : 10 अक्टूबर, 2022

73

मेरे दिल पर हुकूमत कर रही है
तेरी चाहत वसीयत कर रही है

अदाओं का अलग अंदाज़ देखो
निगाहों से शरारत कर रही है

तवक़्क़ो थी जो महबूबा से मुझको
वही बेगम इनायत कर रही है

हसीं मौसम की बाँछें खिल गई हैं
घटा ज़ुल्फ़ों की शामत कर रही है

दलीलों में नहीं दम है ज़रा भी
बहस बेजा हिमाकत कर रही है

ये क्या इंसाफ़ है जो डेट देकर
अबस देरी अदालत कर रही है

लब-ओ-लहजा से ज़ाहिर है कि उलझन
'कँवल' मुझसे मुहब्बत कर रही है

सृजन : 29 अप्रैल, 2024

74

मैं यजमान जबसे बना हूँ
पुरोहित को ही ताकता हूँ

किसी और का हो गया हूँ।
किसी के लिए बेवफ़ा हूँ

ज़ुबां आँखों की काम आई
कहाँ लब से सब कह सका हूँ

नई ड्राइविंग सीख कर मैं
सड़क पर रुकावट बना हूँ

उसे देख कर मस्त हैं सब
नुमाइश में मैं भी खड़ा हूँ

मेरी कमनसीबी तो देखो
किसी कम नज़र का पता हूँ

लिपटने को आतुर है मुझसे
वो कहती है 'मैं तो लता हूँ'

वो देवी है मेरी वफ़ा की
मैं श्रद्धा से नत हो खड़ा हूँ

भले दिन भी कितने भले थे
'कँवल' इन दिनों सोचता हूँ

सृजन : 19 मार्च, 2023

75

ये ज़िन्दगी सवाब है
ग़म ओ ख़ुशी का बाब है

सवाल है जवाब है
जवानी मिस्ल-ए-आब है

है ख़्वाब जो न मिल सका
मिला जो लाजवाब है

ग़मों का इज़्तराब तो
पलों का इंक़लाब है

कंटीले रेगज़ारों में
गुलों का इन्तख़ाब है

गली गली है मौत क्यों
बिके न जब शराब है

मिले त्रिवेणी जल कहीं
तो पुण्य बेहिसाब है

चला जो क्रूज़ गंगा में
विकास की किताब है

जो बाँटती है मौत ही
वो ज़ह्र की शराब है

ग़ज़ल में ढल गया है जो
'कँवल' का वो शबाब है

सृजन : 19 जनवरी, 2023

76

रहबरों की मस्तियाँ
सोचती हैं कुर्सियाँ

अब न आतीं चिट्ठियाँ
खो गई हैं हिचकियाँ

सारी नदियों का वजूद
सोख लेंगी किश्तियाँ

नभ हो, जल, आकाश हो
कम कहाँ हैं नारियाँ

शुद्ध कोई तो करे
घुट रही हैं नद्दियाँ

सूर्यघर में मुफ़्त में
बिजली की है बस्तियाँ

चाँद का दिलकश सफ़र
हो रही तैयारियाँ

सीख माँ, दादी को अब
दे रही हैं बेटियाँ

जग में हैं कुछ लोग जो
कर रहे हैं नेकियाँ

अब परीक्षा के लिए
फ़ालतू हैं पर्चियाँ

वेदना माँ की 'कँवल'
कह रही हैं झुर्रियाँ

सृजन : 15 मार्च, 2024

77

रात का क़िस्सा कहानी आधी रात
गुलरुख़ों की शादमानी आधी रात

हाले-दिल मैं बेसबब सुनता रहा
मौसमों की तर्जुमानी आधी रात

मुफ़लिसों पर पड़ गई भारी बहुत
जनवरी में राजधानी आधी रात

मुल्क की रुसवाई पर आमादा थे
लोग कुछ-कुछ ख़ानदानी आधी रात

बारिशों ने डालना चाहा ख़लल
भीड़ की थी क़द्रदानी आधी रात

रोमियो स्क्वाड था करता रहा
मनचलों पर मेहरबानी आधी रात

पूजा-पंडालों में अतिशय भक्त थे
ख़ुश 'कँवल' थीं माँ भवानी आधी रात

सृजन : 5 अक्टूबर, 2022
विजया दशमी

78

लगता है कुछ अच्छा दिल
आज हुआ है हल्का दिल

सुर्ख नयन हो जाते है
सहता है जाने क्या दिल

जो भी देगा रब देगा
सोच न दुखड़ा रोया दिल

एकाएक कहाँ टूटा
धीरे-धीरे टूटा दिल

बेटी को जब ब्याह दिया
रहता है कुछ खोया दिल

समझे थे हम दिल जिसको
पत्थर का था टुकड़ा दिल

बच्चे की ख़ातिर है बस
पुस्तक का एक बस्ता दिल

भटके तब एहसास हुआ
सीधा साधा रस्ता दिल

उभरा 'कँवल' हर इक लम्हा
हर आहट पर डूबा दिल

सृजन : 8 अक्टूबर, 2022

79

वक़्त के इजलास से मुंसिफ़ उतारे जाएँगे
जो कभी मुजरिम न थे वे सब पुकारे जाएँगे

फ़ैसला होगा समंदर के गुनाहों का ज़रूर
पार लहरों के कभी हम भी किनारे जाएँगे

सोचिए संकल्प है चेहरे पे अब चेहरा नहीं
ज़ुल्म के सारे मुखौटे अब उतारे जाएँगे

सालो भर जब आप रहिएगा इलेक्शन मोड में
भाग्य भारत भूमि के किस दिन सँवारे जाएँगे

आप विकसित राष्ट्र को मत सोचिए सपना है ये
और अगर है स्वप्न तो सच में निखारे जाएँगे

कैसा रहबर है जिसे परवाह लोगों की नहीं
देश हित में फ़ैसले कहता है सारे जाएँगे

याद का दफ़्तर कभी भी बंद होता ही नहीं
तेरे बिन कैसे 'कँवल' ये दिन गुज़ारे जाएँगे

सृजन : 16 मार्च, 2024

80

वतन ख़ुद अपनी मुख़्तारी करेगा
उजाले का सफ़र जारी करेगा।

अगर रहबर बने वो फिर तो कोई
ग़रीबों की न हक़मारी करेगा

बनारस और मथुरा शोर करते
शुरू कब तीसरी पारी करेगा

हज़ारों साल आगे की जो सोचे
वो मोदी की तरफ़दारी करेगा

ये दहशतगर्द साज़िश कर रहे हैं
तू कब इनकी गिरफ़्तारी करेगा

अँधेरों का सफ़र दुश्वार है जब
कहाँ तक कोई हुशियारी करेगा

करेंगे ख़ुदकशी मासूम बच्चे
बड़ा सपना भी बेज़ारी करेगा

पड़ोसी देश से घुसपैठ बाधित
किसी दिन अमला सरकारी करेगा

बनेगा एक विकसित देश भारत
'कँवल' संकल्प हितकारी करेगा

सृजन : 4 मार्च, 2024

81

वह हमनवा नहीं है
पर बेवफ़ा नहीं है

दुख में जो हौसला दे
ऐसा सगा नहीं है

ग़म से निजात पाए
दिल की रज़ा नहीं है

मँझधार में जो छोड़े
वह नाख़ुदा नहीं है

ज़ुल्फ़ों से तेरी काली
कोई घटा नहीं है

उस हुस्न में कशिश है
पर दिलरुबा नहीं है

जो एप से निबट ले
वह आईना नहीं है

शिव शंभु सा दयालू
कोई हुआ नहीं है

दिल को 'कँवल' सुकूँ दे
अब वो फ़िज़ा नहीं है

सृजन : 28 जून, 2023

82

शह्र दर शह्र भर गया पानी
बारिशों में ठहर गया पानी

कार, बाइक कि बस हो, तैर रहे
मस्तियों के नगर गया पानी

कोई हिकमत हो ज़ीस्त की ख़ातिर
अब तो सर से गुज़र गया पानी

देखकर चाल ढाल दरिया का
हिन्द सागर में डर गया पानी

भूमि पर मुश्किलों से मिलता है
इतना नीचे उतर गया पानी

मुल्क में लीडरान हैं ऐसे
जिनकी आँखों का मर गया पानी

आज इज़्ज़त-मआब को देखा
कैसे रुख़ से उतर गया पानी

आज फिर याद वो बहुत आए
आज आँखों में भर गया पानी

सीखिए जल बचाना वर्ना 'कँवल'
ढूँढिएगा किधर गया पानी

सृजन : 3 अक्टूबर, 2022

83

सभी कहते हैं मुझको सब पता है
मगर मैं जानता हूँ क्या हुआ है

कहाँ स्वीकारता है जुर्म अपना
हर इक मुजरिम तो बिल्कुल पारसा है

अदालत का समय बेकार मत कर
सिफ़ारिश पर सिफ़ारिश कर रहा है

न यूँ इल्ज़ाम औरों पर हमेशा
कभी दर्पण उठा कर देखना है

ज़रूरत है नहीं अपनी, लगे तो
ख़मोशी से ही उठ जाना भला है

बहुत ही देर तक होती रहे तो
भली बरसात की मस्ती बजा है

किसी पर भी 'कँवल' हँसना न हरगिज़
बदल कब जाए क़िस्मत क्या पता है

सृजन : 5 अप्रैल, 2024

84

साजन से मिल आई धूप
ख़ुद से हुई पराई धूप

अपनी सुधि खो आई धूप
बेहद है घबराई धूप

इश्क़ की सज धज बन ठन है
हुस्न की है रानाई धूप

रात गयी ऐलान है ये
सुबह की है अँगड़ाई धूप

सूरज के रथ पर चढ़ कर
चलती है इतराई धूप

जाड़े में शैदाई बहुत
करती कहाँ सगाई धूप

'मीर' की ग़ज़लें जैसी है
'तुलसी' की चौपाई धूप

अच्छाई की मिसाल बनी
करती नहीं बुराई धूप

शाम को चल देती है 'कँवल'
शर्माती सकुचाई धूप

सृजन : 6 अक्टूबर, 2022

85

साथ चलने की तमन्ना दिल में है
ख़ौफ़ का ख़ंजर भली महफ़िल में है

उसका चेहरा सबको सूरज सा लगा
तारे चुप-चुप, डर महे-कामिल में है

तख़्त की शहज़ादी है गुमसुम बहुत
क्या पता क्या उसके मुस्तक़बिल में है

जेब में लेकर ग़लत मेरा पता
नाव ख़ुशियों की लब-ए-साहिल में है

ज़िंदगानी का भरोसा कुछ नहीं
आपकी नेकी ही बस हासिल में है

सज्जनों के लब पे हैं श्री राम अब
क़ौम-ए-क़ातिल देखिए मुश्किल में है

एक दूजे की हिफ़ाज़त में 'कँवल'
आज तो हर सर कफ़-ए-क़ातिल में है

सृजन : 24 जून, 2023

86

सितारों भरा जग दुलारा गगन
तमन्ना-ए-दिल ने उतारा गगन

हसीं आरज़ू ने उभारा गगन
ख़ुलुस-ओ-वफ़ा से पुकारा गगन

ज़मीं गुलशन-ए-अम्न की रम गयी
महकने लगा माह-पारा गगन

मुक़र्रर है दो ग़ज़ ज़मीं आपको
तलाशें न अब रब को प्यारा गगन

न है जुस्तजू-ए-ज़रो-सीम की
फ़क़ीरों का है इक सहारा गगन

छटी ग़म की बदली जो वो मिल गए
हुआ पल में ही आशकारा गगन

'कँवल' इन दिनों हैं अदू रंज में
दिए जा रहा है ख़सारा गगन

सृजन : 2 अक्टूबर, 2022
महासप्तमी

87

सिर्फ़ अदहन में है उबलती आग
माँ की ममता है और मीठी आग

मेरे होंठों पे रक्स करती आग
उसके तन में छुपी रुपहली आग

जब उतर आया सीमतन कोई
पानियों के बदन में सुलगी आग

आरती पूजा कीजिए जमकर
जल रही देश में त्रियोगी आग

कुछ दरिंदों ने की बहुत कोशिश
हौसले से बुझी धधकती आग

कितनी रफ़्तार में है देश अपना
झोपड़ों में है 5जी की आग

डेट देने की रस्म कम होगी
कोर्ट लाइव 'कँवल' है बुझती आग

सृजन : 3 अक्टूबर, 2022
महाष्टमी

88

हर ऑफ़िस में एक सा मंज़र
हर कुर्सी पर एक सा अफ़सर

बातें तो करते हैं हँसकर
काम नहीं करते हैं सुंदर

एक ही चक्कर दफ़्तर दफ़्तर
रिश्वतखोर लगाएँ चक्कर

सुविधाशुल्क अदा कर दो तो
देर नहीं लगती है पल भर

आज खड़े हैं तान के सीना
मिलते थे जो कल तक डर कर

भ्रष्टाचारी हुए इकट्ठे
दोस्त बने हैं दुश्मन खुलकर

सूरज से लड़ने को निकला
देख 'कँवल जुगनू का लश्कर

सृजन : 13 जून, 2023

89

हुनर पैरवी का सिखाते हमें
अदालत के गुर कुछ बताते हमें

अँधेरे का स्विच ऑफ़ करके कभी
उजाले की बस्ती दिखाते हमें

जिये अपनी मर्ज़ी से जनता कभी
ये बिल पेश करते लुभाते हमें

तरन्नुम की मलिका ने चाहा जिन्हें
ग़ज़ल ख़ूबसूरत सुनाते हमें

चुनावों में जो व्यस्त हैं सालों भर
तरक़्क़ी के गुलशन में लाते हमें

पहाड़ों के ग़ुस्से का ज्वालामुखी
नदी सँग उतर कर डराते हमें

'कँवल' प्यार के शे'र भी कुछ कहो
कहो याद बेहद वो आते हमें

सृजन तिथि : 4 सितम्बर, 2023

90

हैं अपने सम्बन्ध यथावत
पीर का है अनुबंध यथावत

टूट गयी रिश्तों की डोरी
साँसों की सौगंध यथावत

उमड़ पड़े गरिमा के बादल
गंध सुगंध प्रबंध यथावत

ख़ुशियों की दीवार गई ढह
रिश्तों का तटबंध यथावत

काँटों में सख़्ती है अभी भी
फूलों में है गंध यथावत

बाज़ू में भुजदंड की रौनक
चाल में है कटिबंध यथावत

आयु क्रमांक शतक चौखट पर
मन से 'कँवल' कामांध यथावत

सृजन : 18 मार्च, 2023

91

हौसलों की उड़ान अभिलाषा
कहकहों की मचान अभिलाषा

अपने ऑफ़िस की शान अभिलाषा
फ़ुरसतों में थकान अभिलाषा

फ़ेसबुक, फ़ोटोशॉप या ट्विटर
सब में भरती है जान अभिलाषा

ख़ूब अपलोड करती है वीडियो
इश्तहारों की शान अभिलाषा

पल में कुट्टी तो दोस्ती पल में
वाक़ई है महान अभिलाषा

ग़ुस्सा करती है मीठी बातें भी
मेरी बेगम की जान अभिलाषा

एक 'शेरू' है एक ही 'जैजू'
दोनों पर मेहरबान अभिलाषा

ग़म की बस्ती से दूर रहती है
है ख़ुशी का मकान अभिलाषा

फ़ेस करती है मुश्किलें डट कर
ज़ीस्त की क़द्रदान अभिलाषा

सृजन : 28 नवंबर, 2021

92

हर ख़शुी राह में तेरी आए
के जन्मदिन 8 मार्च, 2024 पर

हर ख़ुशी राह में तेरी आए
कोई मौसम हो मन बहल जाए
ग़म हो आनन्द हो कोई रुत हो
तेरी मस्ती में न कमी आए

नज़्म

पार सत्तर के हो गए हम भी

पार सत्तर के हो गए हम भी
गुज़रे मौसम में खो गए हम भी

तज़रुबों की उड़ान से सीखा
मंज़िल-ए-मेहरबान से सीखा
हसरतों की ढलान से सीखा

मौसम-ए-गुल में खो गए हम भी
पार सत्तर के हो गए हम भी

गुलरुख़ों की नज़र में थे इक दिन
शुहरतों के असर में थे इक दिन
चाहतों के नगर में थे इक दिन

यश की दुनिया में लो गए हम भी
पार सत्तर के हो गए हम भी

फ़ेस टू फ़ेस मिल नहीं पाते
फ़ेसबुक पर ही अब नज़र आते
व्हाट्सप्प पर सदा ठहर जाते

अपनी क़िस्मत पे रो गए हम भी
पार सत्तर के हो गए हम भी

अब कोई काम भी नहीं है हमें
और आराम भी नहीं है हमें
रहना गुमनाम भी नहीं है हमें

कितना एकांत हो गए हम भी
पार सत्तर के हो गए हम भी

खो गया नाम यश पता अपना
खो गया सबसे राब्ता अपना
ख़ुद में अब कुछ नहीं बचा अपना

कैसी दुनिया के हो गए हम भी
पार सत्तर के हो गए हम भी

सृजन : 19 फ़रवरी, 2024
क्षत्रपति शिवाजी महाराज जयंती

स्मृतिशेष श्री हाकिम चंद प्रसाद जी

(देहावसान-5 फ़रवरी, 1999)

पुण्य कर्मों के फल थे बाबूजी

पुण्य कर्मों के फल थे बाबूजी
सोच ऊँची, सरल थे बाबूजी

मुश्किलो में भी मुस्कुराते थे
मन से कितने प्रबल थे बाबूजी

उनके जीवन के लक्ष्य थे हम सब
झोपड़ी में महल थे बाबूजी

ज़िन्दगी थी अभावों में शामिल
थे जटिल प्रश्न, हल थे बाबूजी

कोई चाहत न कुछ तमन्ना थी
कल्प तरुवर, 'कँवल' थे बाबूजी

मैं हूँ मोदी का परिवार

मैं हूँ मोदी का परिवार
मोदी है मेरा परिवार

सुख की चिंता करता है
दुख लोगों की हरता है
खोले जो ख़ुशियों के द्वार
मोदी है मेरा परिवार

भ्रष्टाचार न मन भाए
देश की उन्नति हर्षाए
सीमाओं पर हर त्योहार
मोदी है मेरा परिवार

नारी वंदन अभिनंदन
'मन की बात' में देश सृजन
युवकों पर विश्वास अपार
मोदी है मेरा परिवार

सृजन : 5 मार्च, 2024

आइए होली मिल जुल मनाएँ सभी

(बहन विजय लक्ष्मी के 17 मार्च, 2024 के कार्यक्रम के लिए)

आइए होली मिल जुल मनाएँ सभी
रंग उतरे नहीं जो लगाएँ सभी

होली उत्सव है रंगों उमंगों का जब
प्रेम यौवन से हुलसित तरंगों का जब
कुछ न संकोच हो झूम जाएँ सभी
रंग उतरे नहीं जो लगाएँ सभी

लाल पीला हरा रंग डालेंगे हम
अंजू संजु की चुनरी भिगाएंगे हम
अब शिखा, तापसी को बुलाएँ सभी
रंग उतरे नहीं जो लगाएँ सभी

'होली है' कह शिखा मधु बबीता हनी
रंग लगाएँगी सबको न छूटे कोई
चेहरे पर रंग लगा कर दिखाएँ सभी
रंग उतरे नहीं जो लगाएँ सभी

रेशमा है गुलालों की थाली लिए
और बबली अबीरों की प्याली लिए
होली उत्सव है उत्सव मनाएँ सभी
रंग उतरे नहीं जो लगाएँ सभी

निर्मला पिंकी संध्या कहाँ छुप गईं
संजुला दिव्या रेखा कहाँ रुक गईं
ये विजय लक्ष्मी को बताएँ सभी
रंग उतरे नहीं जो लगाएँ सभी

खाओ पकवान सबको खिलाओ पुआ
आज छोटा कोई है न कोई बड़ा
दुश्मनी लग गले से भुलाएँ सभी
रंग उतरे नहीं जो लगाएँ सभी

सृजन 8 मार्च, 2024

लोकतंत्र के महापर्व पर अपना फ़र्ज़ निभाएँ

लोकतंत्र के महापर्व पर अपना फ़र्ज़ निभाएँ
गली मोहल्लों से चलकर मतदान केंद्र पर जाएँ

अजब जोश है भरा नए मतदाता के तन मन में
प्रथम प्यार का सुख पाएँगे EVM के दर्शन में
पंक्तिबद्ध होकर पहुँचें, पहचान पत्र ले जाएँ

गली मोहल्लों से चलकर मतदान केंद्र पर जाएँ
लोकतंत्र के महापर्व पर अपना फ़र्ज़ निभाएँ

मातृशक्ति के मन में है निश्चय! मतदान करेंगे
मत प्रयोग से ही भारत के बिगड़े दिन सँवरेंगे
मनपसंद उम्मीदवार पर अपना बटन दबाएँ

गली मोहल्लों से चलकर मतदान केंद्र पर जाएँ
लोकतंत्र के महापर्व पर अपना फ़र्ज़ निभाएँ

हर सुविधा मतदान केंद्र पर पूर्ण सुरक्षा भी है
EVM temper proof है इसका हमें भरोसा भी है
निर्भय हो मतदान करें अफवाह नहीं फैलाएँ

गली मोहल्लों से चलकर मतदान केंद्र पर जाएँ
लोकतंत्र के महापर्व पर अपना फ़र्ज़ निभाएँ

सृजन : 16-03-2024

राम अभिनंदन गीत

1

लगा कर घोष 'जय श्री राम' निकले
प्रफुल्लित मन से ख़ास-ओ-आम निकले

भुलाकर अपने सारे काम निकले
सभी के मुख से जय श्री राम निकले

मिला अक्षत निमंत्रण-पत्र सब को
सभी घर से अयोध्या धाम निकले

हर इक घर में जले श्रीराम ज्योति
हर इक घर से सुगंधित शाम निकले

बड़ा शुभ दिन है बाइस जनवरी ये
ग़ुलामी के सभी आयाम निकले

जले दीपों की लड़ियाँ फ्लैट-घर में
दिवाली सी सुशोभित शाम निकले

हर इक मंदिर में पूजा अर्चना हो
शिवालय-मठ से धुन श्री राम निकले

धरा दीपावली सी जगमगाये
हर आंगन से ख़ुशी का याम निकले

तुझे भी हो सुलभ हनुमान-भक्ति
'कँवल' तू भी अयोध्या धाम निकले

यू ट्यूब पर डॉ. दुर्गेश उपाध्याय और बीना चटर्जी की आवाज में 2 वीडियो

2

श्रीराम तुम्हारा हम गुणगान सुनाते हैं
अभिनंदन राम लला हम धूम मचाते हैं
नगर में जश्न मनाते हैं
हर इक घर दीप जलाते हैं

ये साल है ख़ुशियों का, उत्सव का महीना है
भारत की अंगूठी में नव अवध नगीना है
हम प्राण प्रतिष्ठा में श्री राम लला आए
हम ढोल नगाड़ों की ढम ढम सुख पाते हैं

नगर में जश्न मनाते हैं
हर इक घर दीप जलाते हैं

बनवास बड़ी लंबी शत पाँच बरस प्रभु के
दुष्टों की हिदायत पर तंबू में हैं गुज़रे
मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम तुम्हारी जय
ये महल तुम्हारा है मंदिर में बुलाते हैं

नगर में जश्न मनाते हैं
हर इक घर दीप जलाते हैं

अब राम राज्य का हम जयघोष लगाएँगे
हर ओर सुमंगल हो वह राष्ट्र बनाएँगे
भटके हुए लोगों का अज्ञान मिटा कर हम
हर्षित जग कर देंगे विश्वास दिलाते हैं
नगर में जश्न मनाते हैं
हर इक घर दीप जलाते हैं

श्रीराम लखन सीता हनुमान जी आते हैं
संपूर्ण विश्व में सब जयकार लगाते हैं
सौगंध राम की है अब राष्ट्र सबल होगा
महलों में, कुटियों में, सब दीप जलाते हैं

नगर में जश्न मनाते हैं
हर इक घर दीप जलाते हैं

डॉ. कमलेश हरिपुरी और बीना चटर्जी की आवाज़ में
यू ट्यूब पर 2 वीडियो

3

ख़त्म हुआ बनवास, मनाओ उत्सव, झूमो गाओ।
राम पधारे अवध, घरों आँगन में दीप जलाओ

स्वच्छ करो सब घर, हर मंदिर, साफ़ करो गलियारा
पावन हृदय शुद्ध मन से हो राम का स्वागत न्यारा
अभिनंदन श्रीराम तुम्हारा है, जयघोष लगाओ
राम पधारे अवध, घरों आँगन में दीप जलाओ

पाँच शतक संघर्ष के बीते कष्ट सहें हम भारी
अपने देश में ही तंबू के दुख भोगे त्रिपुरारी
प्राण प्रतिष्ठा में राघव के डंका ढोल बजाओ
राम पधारे अवध, घरों आँगन में दीप जलाओ

आज सनातन धर्म मिटाने को लगता है नारा
हिंदू राष्ट्र बनाने को संकल्पित देश हमारा
सकल विश्व में हिन्दू का इक विकसित राष्ट्र बनाओ
राम पधारे अवध, घरों आँगन में दीप जलाओ

डॉ. कमलेश हरिपुरी और बीना चटर्जी की आवाज़ में
यू ट्यूब पर 2 वीडियो

4

अब तो आ गये राम, उठो सब मंगल गाओ।
देखो पुष्पक यान अवध में, धूम मचाओ

अद्भुत और अलौकिक है श्रीराम का मंदिर
दिव्य छटा वैभवशाली है ठाट मनोहर
राम नाम ही मोक्ष का है आधार बताओ
अब तो आ गये राम उठो, सब मंगल गाओ।

विश्व सनातन धर्म ध्वजा का केंद्र अयोध्या
समृद्ध नगर हुआ उत्सव मय हर्ष में डूबा
राम लला के प्राण प्रतिष्ठा का सुख पाओ
अब तो आ गये राम उठो, सब मंगल गाओ।

देश विदेश में राम का डंका नगर में उत्सव
राम की मुद्रा, राम पताका, स्वर्णिम वैभव
ख़ुशियाँ बाँटो सिया-राम की कीर्ति सुनाओ
अब तो आ गये राम उठो, सब मंगल गाओ।

5

लौटे राम अयोध्या धाम
अभिनंदन! जय जय श्रीराम

ख़ुशियाँ वापस घर आईं
हृदय की कलियाँ मुसकाईं
दुख पर लग गया पूर्ण विराम
अभिनंदन! जय जय श्रीराम

उत्सव गाँव नगर में है
दीपोत्सव घर घर में है
डंका ढोल बजे अभिराम
अभिनंदन! जय जय श्रीराम

हिन्दू राष्ट्र बनाएँगे
गौरव मान बढ़ाएँगे
राम कृपा हो आठों याम
अभिनंदन! जय जय श्रीराम

बीना चटर्जी की आवाज़ में यू ट्यूब पर वीडियो

ग़ज़लों में प्रयुक्त बह्र और उनके अरकान

1. **बह्र : बह्र-ए-मुतदारिक मुसम्मन सालिम**
   अर्कान : फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन
   मात्रा भार : 212 212 212 212
   मात्रा स्तम्भ :राम जी राम जी राम जी राम जी
   कुर्सियाँ हैं कहाँ फैला अख़बार है (ग़ज़ल क्रमांक-33)
   जो समर्पित थे कल तक बदलने लगे (ग़ज़ल क्रमांक-46)

2. **बह्र : बह्र-ए-मुतदारिक मुसद्दस सालिम**
   अर्कान : फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन
   मात्रा भार : 212 212 212
   मात्रा स्तम्भ : राम जी राम जी राम जी
   आइए अब न शरमाइए (ग़ज़ल क्रमांक-4)
   तू उधर था, इधर हो गया (ग़ज़ल क्रमांक-51)

3. **बह्र : बह्र-ए-मुतक़ारिब मुसम्मन सालिम**
   अर्कान : फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन
   मात्रा भार : 122 122 122 122
   मात्रा स्तम्भ : पवनसुत पवनसुत पवनसुत पवनसुत
   इशारा, तबस्सुम, नज़ाकत जवानी (ग़ज़ल क्रमांक-18)
   किसी के लिये आशिकी है मुहब्बत (ग़ज़ल क्रमांक-31)
   किसी राहबर ने ये सच ही कहा है (ग़ज़ल क्रमांक-32)
   कोरोना ने जम कर मचाई तबाही (ग़ज़ल क्रमांक-50)
   नगर, गाँव, बस्ती जलाने से बचिए (ग़ज़ल क्रमांक-57)

4. **बह्र : बह्र-ए-मुतक़ारिब मुसम्मन महज़ूफ़**
अर्कान : फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़अल
मात्रा भार : 122 122 122 12
मात्रा स्तम्भ : पवनसुत पवनसुत पवनसुत पवन
किनारे खड़ा था भला आदमी (ग़ज़ल क्रमांक-30)
सितारों भरा जग दुलारा गगन (ग़ज़ल क्रमांक-86)
हुनर पैरवी का सिखाते हमें (ग़ज़ल क्रमांक-89)

5. **बह्र : बह्र-ए-मुतक़ारिब मुसद्दस सालिम**
अर्कान : फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन
मात्रा भार : 122 122 122
मात्रा स्तम्भ : पवनसुत पवनसुत पवनसुत
मैं यजमान जबसे बना हूँ (ग़ज़ल क्रमांक-74)

6. **बह्र-बह्र-ए-रमल मुरब्बा सालिम**
अर्कान : फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन
मात्रा भार : 2122 2122
मात्रा स्तम्भ : राम जै जै राम जै जै
आप से जब मन मिला है (ग़ज़ल क्रमांक-14)
तुमसे मिलने का इरादा (ग़ज़ल क्रमांक-49)

7. **बह्र : बह्र-ए-रमल मुसद्दस सालिम**
अर्कान : फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन
मात्रा भार : 2122 2122 2122

मात्रा स्तम्भ : राम जै जै राम जै जै राम जै जै

घर के बाशिंदों की अनबन बढ़ गयी है (ग़ज़ल क्रमांक-40)

8. बह्र : बह्र-ए-रमल मुसम्मन महज़ूफ़

अर्कान : फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन

मात्रा भार : 2122 2122 2122 212

मात्रा स्तम्भ : राम जै जै राम जै जै राम जै जै राम जै

ख़ुशनुमा लमहों के पंछी छत बदलते ही रहे (ग़ज़ल क्रमांक-34)

ग़म के दस्तरख़्वान पर ख़ुशियाँ सजा सकता हूँ मैं (ग़ज़ल क्रमांक-38)

वक़्त के इजलास से मुंसिफ़ उतारे जाएँगे (ग़ज़ल क्रमांक-79)

9. बह्र-ए-हज़ज मुसम्मन अशतर मक़्बूज़, मक़्बूज़, मक़्बूज़

फ़ाइलुन मफ़ाइलुन मफ़ाइलुन मफ़ाइलुन

212 1212 1212 1212

आँखें, ज़ुल्फ़े, होंठ और गाल देखते रहे (ग़ज़ल क्रमांक-6)

10. बह्र : बह्र-ए-रमल मुसद्दस महज़ूफ़

अर्कान : फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन

मात्रा भार 2122 2122 212

मात्रा स्तम्भ : राम जै जै राम जै जै राम जै

अब कहाँ मधुमास अपने गाँव में (ग़ज़ल क्रमांक-01)

अक्षरों से शब्द बेकल हो गए (ग़ज़ल क्रमांक-03)

आपको देखा जो मैंने ख़्वाब में (ग़ज़ल क्रमांक-11)

उनसे मिल कर भाव विह्वल हो गए (ग़ज़ल क्रमांक-22)

डूबने वालों में उसका नाम है (ग़ज़ल क्रमांक-48)
इश्क़ का आँगन इधर गुलज़ार है (ग़ज़ल क्रमांक-55)
फूल ख़ुशबू से समाहित हो गए (ग़ज़ल क्रमांक 62)
मुँह पे गमछा बाँधने की ठान ली (ग़ज़ल क्रमांक-69)
साथ चलने की तमन्ना दिल में है (ग़ज़ल क्रमांक-85)

11. बह्र : बह्र-ए-रमल मुसद्दस महज़ूफ़
अर्कान : फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलान
फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलात
मात्रा भार 2122 2122 2121
मात्रा स्तम्भ : राम जै जै राम जै जै राम राम
रात का क़िस्सा कहानी आधी रात (ग़ज़ल क्रमांक-77)

12. बह्र : बह्र-ए-रमल मुरब्बा महज़ूफ़
अर्कान : फ़ाइलातुन फ़ाइलुन
मात्रा भार 2 1 2 2 2 1 2
मात्रा स्तम्भ : राम जै जै राम जै
दर्द की भाषा पढ़ो (ग़ज़ल क्रमांक-56)
मेरे घर आई ख़ुशी (ग़ज़ल क्रमांक-72)
रहबरों की मस्तियाँ (ग़ज़ल क्रमांक-76)

13. बह्र : बह्र-ए-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़बून महज़ूफ़
अर्कान : फ़ाइलातुन मफ़ाइलुन फ़ेलुन/फ़इलुन
मात्रा भार: 2 1 2 2 1 2 1 2 2 2 /112
मात्रा स्तम्भ : राम जै जै हरे हरे रामा / हरि जै

आँच के पास आ गया कोयला (ग़ज़ल क्रमांक-8)
आपके हुस्न की लताफ़त हूँ (ग़ज़ल क्रमांक-10)
आप मेरे क़रीब आने लगे (ग़ज़ल क्रमांक-13)
आप से मेहरबान का वादा (ग़ज़ल क्रमांक-15)
ओस पर धूप जब सँवरती है (ग़ज़ल क्रमांक-16)
ईंट गारे का था हमारा घर (ग़ज़ल क्रमांक-19)
उसके तन में बसी हुई ख़ुशबू (ग़ज़ल क्रमांक-23)
कर के सुमिरन पकाई है रोटी (ग़ज़ल क्रमांक-25)
ग़ज़वा ए हिन्द का इरादा है (ग़ज़ल क्रमांक-37)
चूम कर आ गया नयन उसका (ग़ज़ल क्रमांक-41)
जब से इस दिल को भा गयी मिट्टी (ग़ज़ल क्रमांक-44)
पाँच जी की ही चल रही है हवा (ग़ज़ल क्रमांक-60)
बदला बदला सा है मेरा दफ़्तर (ग़ज़ल क्रमांक-64)
मेरी आँखों में आ गए आँसू (ग़ज़ल क्रमांक-71)
शहृ दर शहृ भर गया पानी (ग़ज़ल क्रमांक-82)
सिर्फ़ अदहन में है उबलती आग (ग़ज़ल क्रमांक87)
हौसलों की उड़ान अभिलाषा (ग़ज़ल क्रमांक-91)

14. फ़ाइलुन मफ़ाइलान
बह्र : बह्र-ए-हज़ज मुरब्बअ अश्तर मक़्बूज़ मुसब्बग़
बाग़ में मिली बहार
बाग़ में मिली बहार (ग़ज़ल क्रमांक-66)

15. बह्र-ए-मज़ारिअ मुसम्मन मक्फ़ूफ़ मक्फ़ूफ़ मुख़न्नक मक़्सूर
मफ़ऊलु फ़ाइलातुन मफ़ऊलु फ़ाइलातुन

221 2122 221 2122

इस इश्क़ से नसीला कोई नशा नहीं है (ग़ज़ल क्रमांक-52)

16. बह्र-ए-हज़ज मुसम्मन सालिम

मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन

1222 1222 1222 1222

बड़े ही ख़ूबसूरत हैं, बड़े प्यारे मज़े के दिन (ग़ज़ल क्रमांक-63)

17. बह्र-ए-हज़ज मुसद्दस सालिम

मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन

1222 1222 1222

कहो ! कैसे हुआ आना, बताओ तो (ग़ज़ल क्रमांक-28)

18. बह्र : बह्र-ए-हज़ज मुरब्बअ मक़्बूज़

मुफ़ाइलुन मुफ़ाइलुन

ये ज़िन्दगी सवाब है (ग़ज़ल क्रमांक-75)

19. बह्र : बह्र-ए-हज़ज मुसद्दस महज़ूफ़ उल आख़िर

अर्कान : मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन फ़ऊलुन

हरे रामा हरे रामा हरे जै

उजाले बाँटने जो चल पड़े हैं (ग़ज़ल क्रमांक-21)

मेरी मुट्ठी में चारों धाम आए (ग़ज़ल क्रमांक-53)

नज़र से आरती तेरी उतारूँ (ग़ज़ल क्रमांक-58)

निगाहों में बसी है तेरी मूरत (ग़ज़ल क्रमांक-59)

वतन ख़ुद अपनी मुख़्तारी करेगा (ग़ज़ल क्रमांक-80)

20. बह्र-ए-मुज्तस मख़्बून महज़ूफ़/महज़ूफ़ मुसक्कन/मक़्सूर/मक़्सूर मुसक्कन।
मफ़ाई-लुन फ़इलातुन मफ़ाई-लुन फ़इलुन/फ़ेलुन/फ़इलान/फ़ेलान।
हरे रामा / भज रामा /हरे रामा / भज रे
मफ़ाइलुन फ़इलातुन मफ़ाइलुन फ़ेलुन
भरी हुई थी मेरी आँख, हँस रहा था वो (ग़ज़ल क्रमांक-68)

21. बह्र-ए-हजज़ मुसमन अख़रब मक्फ़ूफ मक्फ़ूफ मक्फ़ूफ महज़ूफ़
मफ़ऊलु मुफ़ाईलु मुफ़ाईलु फ़ऊलुन
221 1221 1221 122
गर्दिश से निकल आया है क़िस्मत का सितारा (ग़ज़ल क्रमांक-39)
जब फेंके कोई मुझ पे तेरे नाम का पत्थर (ग़ज़ल क्रमांक-43)

22. बह्र-ए-हज़ज मुसम्मन अख़रब मक्फ़ूफ़ मक्फ़ूफ़ मुख़न्नक सालिम
मफ़ऊलु मुफ़ाईलुन मफ़ऊलु मुफ़ाईलुन
221 1222 221 1222
आगाज़ मुबाइल है अंजाम मुबाइल है (ग़ज़ल क्रमांक-7)

23. बह्र : बह्र-ए-रजज़ मुरब्बअ मख़्लूअ
मुसतफ़इलुन फ़ऊलुन
वह हमनवा नहीं है (ग़ज़ल क्रमांक-81)

24. बह्र : बह्र-ए-मुतदारिक मुसम्मन मख़्बून मुसक्कन
फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन
रामा रामा रामा रामा
ख़ुशियों का दीदार है औरत (ग़ज़ल क्रमांक-35)

हर ऑफ़िस में एक सा मंज़र (ग़ज़ल क्रमांक-88)

हैं अपने सम्बन्ध यथावत (ग़ज़ल क्रमांक-90)

25. बह्र-ए-मुतदारिक मुसम्मन मख़्बून मुसक्कन मह्ज़ूज़

अर्कान : फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़े

रामा रामा रामा जै

आप बताएँ क्या है सच (ग़ज़ल क्रमांक-12)

खोकर पाने की आशा (ग़ज़ल क्रमांक-36)

जब तक मेरे पास रहा (ग़ज़ल क्रमांक-42)

डिजिटल करे पढ़ाई ग़म (ग़ज़ल क्रमांक-47)

थोड़ी ख़ुशी, क्यों बेसी ग़म (ग़ज़ल क्रमांक 54)

पाँव बुज़ुर्गों के दाबे (ग़ज़ल क्रमांक-61)

बे हद मालामाल हुआ (ग़ज़ल क्रमांक-67)

लगता है कुछ अच्छा दिल (ग़ज़ल क्रमांक-78)

26. बह्र : बह्र-ए-मुतदारिक मुसम्मन मख़्बून मुसक्कन मत्मूस

फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ाअ

रामा रामा रामा राम

ईश्वर अंश भला इंसान (ग़ज़ल क्रमांक 20)

करता आया अब तक पाप (ग़ज़ल क्रमांक 26)

काली रात का टीका चाँद (ग़ज़ल क्रमांक 29)

साजन से मिल आई धूप (ग़ज़ल क्रमांक 84)

27. बह्र : बह्र-ए-मुतदारिक मख़्बून मुसक्किन महज़ूज़ बारह रुक्नी

फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन

करना है कुछ कुछ परिवर्तन संविधान में (ग़ज़ल क्रमांक-27)

28. बह्र : बह्र-ए-मुतदारिक मख़्बून मुसक्किन महज़ूज़ बारह रुक्नी

फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़े

अब तक आँखों में वो ख़्वाब सुनहरे हैं (ग़ज़ल क्रमांक 2)

उस से मिलना बेहद अच्छा लगता है (ग़ज़ल क्रमांक 24)

बरसों बाद ज़मानत पर है आई ग़ज़ल (ग़ज़ल क्रमांक 65)

29. बह्र : बह्र-ए-मुतक़ारिब मुसम्मन मक्बुज़ असलम

फ़ऊलु फ़ेलुन फ़ऊलु फ़ेलुन

अराम रामा अराम रामा

मुहब्बतों का क़सूर है ये (ग़ज़ल क्रमांक 70)

मुहब्बतों का शायर : रमेश 'कँवल'

नाम : रमेश प्रसाद,बि.प्र.से.(से.नि.)

जन्म तिथि : 25 अगस्त,1953

धर्मपत्नी : श्रीमती मंजू प्रसाद
(परिणय 22 जून1978)

अदबी ख़िदमात : 'कँवल' शाहाबादी नाम से पहली ग़ज़ल परवाज़, लुधियाना से अगस्त 1972 में प्रकाशित हुई|

प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह :

- लम्स का सूरज (उर्दू), सावन का कँवल (हिंदी) 1997 में
- शोहरत की धूप (हिंदी) 2013 में, रंग-ए –हुनर (उर्दू) 2016 में
- स्पर्श की चांदनी : काव्य संग्रह (ग़ज़ल नज़्म) 2019 में
- फ़ेसबुक पर मचलती ग़ज़लें : ग़ज़ल संग्रह 2024
- अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें : ग़ज़ल संग्रह 2024

सम्पादन 2020 में

- अक़ीदत के फूल : (ग़ज़ल नज़्म) 2020

संपादन 2021

- 2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें : 600 ग़ज़लों का संकलन

संपादन-2022

- 21 वीं सदी के 21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें
- एक रुक्नी अनूठी ग़ज़लें

सम्पादन 2023

- अमृत महोत्सव की ग़ज़लें 75 रदीफ़ों पर ग़ज़लें
- क्या सुनाएँ हाले-दिल-हफ़ीज़ बनारसी हफ़ीज़ बनारसी की ग़ज़लों का संग्रह

- आज फूलों में ताज़गी कम है-हफ़ीज़ बनारसी की ग़ज़लों का संग्रह
- वंदन ! शुभ अभिवंदन ! देव स्तुति की कविताओं का संग्रह

सम्पादन : 2024
- 24 बह्रों में 2024 की दिलकश ग़ज़लें

अन्य पुस्तकों में शामिल ग़ज़लें :
- रंगारंग शायरी (संपादक –प्रकाश पंडित),
- ग़ज़ल इंटर नेशनल (संपादक मंसूर उस्मानी)
- ग़ज़ल : दुष्यंत के बाद भाग 2 (संपादक दीक्षित दनकौरी)
- बिहार में जदीद ग़ज़ल (संपादक अताउल्लाह खां अल्वी)
- 101 किताबें ग़ज़लों की (संपादक नीरज गोस्वामी)
- संदल सुगंध भाग 4 (संकलित काव्य संग्रह) में पृष्ठ 33-38 पर ग़ज़लें
- हिंदी ग़ज़ल का बदलता मिज़ाज (संपादक अनिरुद्ध सिन्हा) पृष्ठ 92-98 पर ग़ज़लें
- 30 ग़ज़लगो 300 ग़ज़लें-डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति में ग़ज़लें शामिल
- ग़ज़ल त्रयोदश / उत्तरवाहिनी / अंडरलाइन इत्यादि ग़ज़ल विशेषांक में ग़ज़लें प्रकाशित

कविताकोश :
- www.kavitakosh.org पर 80 से ज़्यादा ग़ज़लें-गीत
- www.urduyouthforum.org पर 25 से ज़्यादा ग़ज़लें
- www.rekhta.org पर 10 से ज़्यादा ग़ज़लें
- 2 e-book 1 लम्स का सूरज (उर्दू), 2 रंग-ए –हुनर (उर्दू)

सम्प्रति :
- बिहार प्रशासनिक सेवा में संयुक्त सचिव स्तर के पद से सेवानिवृत
- (पटना में लगभग 3 साल तक ए डी एम लॉ एंड आर्डर रहे) के पश्चात

- सफ़ीर-ए-शहर-ए-शेर ओ अदब
- सदर : बज़्म-ए-हफ़ीज़ बनारसी,पटना : मरकज़-ए-रंग-ए-हुनर

निवास : 6, मंगलम विहार कॉलोनी, आरा गार्डन रोड, जगदेव पथ, पटना-800014

मोबाइल : 878 976 1287

ई-मेल : rameshkanwal78@gmail.com

वेबसाइट : www.rameshkanwal.com